ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

चैत्र-वैसाख संवत् नानकशाही ५५५ अप्रैल 2023 वर्ष १६ अंक ८

तख्त श्री केसगढ़ साहिब,
श्री अनंदपुर साहिब

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा
इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़्म
बहादरगढ़ (पटियाला)

बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़ (गुरुद्वारा मैनेजमेंट)
BACHELOR OF MANAGEMENT STUDIES (GURDWARA MANAGEMENT)
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब)

त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

योग्यता और फीस

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा (कोई भी ग्रुप) उत्तीर्ण हो तथा उम्मीदवार गुरसिक्ख होना चाहिए।
- 11वीं कक्षा उत्तीर्ण और 12वीं कक्षा के इम्तिहान देने जा रहे उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक 25 वर्ष हो।
- वार्षिक फीस केवल 15000/- रुपए है जो दो छमाही किश्तों में दी जा सकती है।

सुविधाएं

- रिहायश के लिए फ्री होस्टल के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से खाने (लंगर) आदि के ख़र्च के लिए 1500/- रुपए प्रति महीना वज़ीफ़ा।

उच्च शिक्षा और रोज़गार संभावनायें

- यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार एम.बी.ए., एम. कॉम. के अलावा धर्म, इतिहास आदि विषयों में एम. ए. या पोस्ट-ग्रेजुएट डिप्लोमा कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- गुरुद्वारा प्रबंध के अलावा अन्य समाजसेवी और प्रशासनिक अदारों में सेवा करने के योग्य होंगे।
- देश-विदेश में गुरुद्वारा साहिबान में सेवाएं देने के योग्य होंगे।

दाख़िले संबंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

84377-00852, 90416-20861, 75270-56756

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

1500/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़े की सुविधा

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंघ एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि।।

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

चैत्र-वैसाख, संवत् नानकशाही 555
वर्ष 16 अंक 8 अप्रैल 2023

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ 7
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी में पेश जीवन-दर्शन 13
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर
भक्त धंना जी 16
-डॉ. शमशेर सिंघ
पांच प्यारे 19
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
पंथ की जीत 22
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज 25
-डॉ. मनजीत कौर
ज्ञानी गिआन सिंघ से सम्बन्धित हुआ खोज-कार्य 29
-डॉ. धरम सिंघ
अपनी पति सेती घरि जावहु 36
-डॉ. परमजीत कौर
किसानी आंदोलन (संघर्ष) बनाम सिक्ख इतिहास 42
-स. किरपाल सिंघ
खबरनामा 46

गुरबाणी विचार

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३ ॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में वैसाख मास के वातावरण एवं मौसम तथा इसमें की जाने वाली क्रियाओं की सांकेतिक पृष्ठभूमि में मनुष्य-जीवन रूपी इस कालखंड को प्रभु-नाम-सिमरन द्वारा उपयोग में लाने तथा सफल करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि वैसाख मास में भले ही जनसाधारण की ख्वाहिशें-उमंगें फलीभूत होती हों परंतु इस मास में भी उन जीव-स्त्रियों का हृदय धैर्य धारण नहीं कर सकता जो कि प्रभु-भक्ति अथवा प्रभु-प्रेम से दूर हैं। परमात्मा ही आत्मा का मित्र है और अज्ञानतावश उसी एकमात्र मित्र को भुला देने से धैर्य आ भी नहीं सकता, क्योंकि उसको सांसारिक माया ने अपनी तरफ खींच लिया है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि न पुत्र, न स्त्री और न धन ही मनुष्य का साथ देता है। साथ देने वाला तो सदैव स्थिर प्रभु ही है, लेकिन दुखदायक स्थिति यह है कि कुछ एक चुनिंदा गुरमुखों को छोड़कर समस्त संसार मोह या सांसारिक लगाव के व्यवसाय में खचित होकर आत्मिक मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। वे इस रहस्य को समझते नहीं कि मात्र प्रभु-नाम ही आगामी जीवन में काम आता है, शेष सांसारिक कार्य यहीं रह जाते हैं अर्थात् वे आत्मिक जीवन का अंग नहीं बन पाते। प्रेम-स्वरूप प्रभु को भुलाकर सब कुछ बर्बाद होना निश्चित है, क्योंकि उसके बिना कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है।

पंचम पातशाह चुनिंदा गुरमुखजनों की स्थिति दर्शाते हुए कथन करते हैं कि जो जन प्यारे प्रभु के चरणों के साथ जुड़ गए हैं अथवा उसकी प्रेमा-भक्ति में रत हो गए हैं उनकी शोभा निर्मल है। विनती है कि हे प्रभु! हमें अपने साथ मिला लो, क्योंकि वैसाख रूपी जीवन-खंड सुहावना तभी है जब पूर्ण संत अथवा सतिगुरु के साथ भेंट हो जाए और वह प्रभु के साथ मिलाप का सबब बना दे।

संपादकीय

वैसाखी की अहमियत

प्राचीन काल से ही भारतवासियों के लिए दीवाली, वैसाखी तथा होली का विशेष महत्त्व रहा है। वैसाखी मौसमी त्यौहार है। यह विक्रमी संवत् के अनुसार वैसाख की संक्रांति को मनाया जाता है। इन दिनों सर्दी के बाद मौसम में परिवर्तन आ जाता है तथा ग्रीष्म ऋतु की शुरूआत होती है। खेतों में पकी हुई फसलों को देखकर मानव-मन में नया जोश पैदा हो जाता है । वातावरण में बसंत की आमद से ही वृक्षों के नवीन-ताजा पत्ते प्रकृति में विस्माद उत्पन्न कर देते हैं। नई फसल की आमद प्रत्येक के लिए आर्थिक खुशहाली की उम्मीद लेकर आती है। इस प्रकार यह दिवस हर पक्ष से खुशहाली का प्रतीक बन जाता है जो जनसाधारण में नया जोश भरकर उसे कुछ नया सृजित करने के लिए प्रेरित करता है । प्राचीन रिवायत है कि वैसाखी वाले दिन ही व्यास ऋषि ने वेदों को सम्पूर्ण करके पहली बार पाठ पूरा किया था। यह भी रिवायत है कि इस दिन राजा जनक ने यज्ञ करके अष्टावक्र से ज्ञान की प्राप्ति की थी।

सिक्ख गुरु साहिबान ने भी नई योजनाओं के निर्धारण के लिए इसी दिन का चयन किया। सिक्ख गुरु साहिबान ने उपद्वियों के हाथों हताश हुई जनता को उनके जब्र-जुल्म का मुकाबला करने की प्रेरणा दी। चतुर लोगों के हाथों भोलेभाले लोगों की हो रही लूट से उन्हें आगाह किया तथा स्त्रियों को उनकी शक्ति का एहसास करवाया। सिक्ख धर्म में सबसे पहले वैसाखी के अवसर पर इकट्ठे होकर नई योजनाओं पर चिंतन करने के लिए तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने भाई पारो जुलका को संगत की एकत्रा बुलाने का आदेश दिया। इस अवसर पर एकत्र संगत को सारे कर्मकांड छोड़कर अकाल पुरख के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी गई। नाम-सिमरन व हाथों से काम करने एवं बांटकर छकने की योजनाएं तैयार की गईं। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. में वैसाखी वाले दिन सिक्खी को सर्वोच्चता प्रदान की। श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती पर एकत्र विशाल जनसमूह में से गुरु जी ने पांच प्यारों का चयन कर खालसा पंथ की साजना की । गुरु जी द्वारा सजाया खालसा आने वाले समय में उल्लेखनीय प्राप्तियां करता गया । गुरु जी द्वारा खालसे को प्रदान किया विशुद्ध स्वरूप रहती दुनिया तक बरकरार रहेगा। यह जो सभ्याचार खालसे को गुरु जी द्वारा बख़्शिश किया गया वो लगातार पीढ़ी-दर-पीढ़ी सफर तय करता जा रहा है।

सन् १७३३ ई. में वैसाखी वाले दिन एकत्र खालसा पंथ की प्रगति भांपते को महसूस करते हुए जकरिया ख़ान ने गुरु-पंथ को नवाबी की पेशकश की। १७४७ ई. में वैसाखी के ही दिन एकत्र खालसा पंथ द्वारा श्री अमृतसर में रामरौणी का (कच्चा) किला बनाने का फैसला किया गया। यह किला सिक्खों के लिए भारी संकट के समय सुरक्षित स्थान के रूप में काम आया। १७४८ ई. में वैसाखी वाले दिन पंथ खालसा नामक जत्थेबंदी तैयार की गई, जो जुलमी शासन को खत्म कर अपनी बहादुरी के झंडे गाड़ती हुई सिक्ख राज्य की स्थापना को बुलंदियों तक लेकर पहुंची।

सिक्ख-विरोधियों की साजिशों के कारण पंजाब एक बार फिर से अंग्रेजों की गुलामी में चला गया। गुरु साहिबान द्वारा दी नसीहत ने फिर से सिक्खों को आज़ादी के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। अंग्रेजों को भारत की धरती से वापिस भेजने की योजना बनाने के लिए १९१९ ई. की वैसाखी वाले दिन जलियां

वाला बाग में भारी एकत्रता की गई। अंग्रेज सरकार को पता चलने पर निहत्थे पंजाबियों पर जबरदस्त फायरिंग की गई। हज़ारों लोग शहादत प्राप्त कर गए। इस घटना के बाद देश के लिए मर मिटने वाले पंजाबियों ने हथियार उठा लिए। अनेक कुर्बानियों के बाद सिक्खों का यह संघर्ष तब तक चलता रहा जब तक अंग्रेज भारत छोड़कर नहीं चले गए।

पंथ-विरोधी ताकतों को सिक्खों की चढ़दी कला कभी भी अच्छी रास नहीं आई। पंथ-विरोधियों ने सिक्खों में घुसपैठ करके पंथ को नुकसान पहुंचाने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने दिया। इसी शृंखला के अधीन गुरु-दंभ की आड़ में (नकली) निरंकारियों ने खालसा पंथ को वैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर आकर नीचा दिखाने की घटिया चाल चली। सन् १९७८ में वैसाखी वाले दिन (नकली) निरंकारियों की चुनौती का मुंहतोड़ जवाब देते हुए खालसा पंथ के १३ सिंघों ने शहीदी प्राप्त की। सिक्खों ने बता दिया कि सिक्ख पंथ के प्रति बुरी नज़र रखने वालों का खालसा पंथ कैसे सामना कर सकता है। खालसा पंथ की इस बहादुरी से पंथ में फूट डालने वालों की साजिशें धरी-धरायी रह गईं।

सभ्याचार के विकास-विगास की दर साधारणतया बहुत धीमी गति से चलती है। मनुष्य को सभ्याचार की दात स्वाभाविक ही प्राप्त होती रहती है। मनुष्य को पता नहीं चलता कि वो कब और कैसे अपने सभ्याचार को कायम रखने तथा इसके विकास-विगास में योगदान देने के योग्य हो जाता है। किसी सभ्याचार में कभी-कभी बाहरी हस्तक्षेप के कारण दोष उत्पन्न होने शुरू हो जाते हैं, जिन्हें रोकने के लिए सुचेत वर्गों को हमेशा तत्पर रहना चाहिए। सिक्ख सभ्याचार का विलक्षण स्वरूप शेष संसार से अलग है। सिक्ख जान तो दे सकता है मगर अपने केश कत्ल नहीं करवा सकता। इस संदर्भ में हमें यह बात सोचने के लिए विवश करती है कि आज के सिक्ख बच्चे अपने इस सभ्याचार से दूर क्यों होते जा रहे हैं! कमी है हमारी, क्योंकि शायद हम बदलते समय के अनुसार सिक्ख सभ्याचार के विकास की गति की तरफ ध्यान नहीं दे पा रहे। जहां इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में करके अपना निजी लाभ प्राप्त करने के लिए काम किया है वहीं सिक्ख सभ्याचार पर भी गहरा विपरीत प्रभाव डाला है। अपने बुजुर्गों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सभ्याचार प्राप्त करने की जगह हमारे बच्चे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से प्रभावित होकर अपना अलग ही सभ्याचार सृजित किए जा रहे हैं। हमारा पहरावा, खान-पान, भाषा, रहन-सहन, रिश्ते-नाते सब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ही निर्धारित करता जा रहा है। पंजाबियों, विशेषत: सिक्खों की अलग पहचान को खत्म करने के लिए मीडिया ने एड़ी-चोटी का जोर लगा रखा है। सिक्खों के इतिहास को समझे बिना ही टिप्पणियां करके उपहासास्पद बातें की जा रही हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी पर सामाजिक नाटकों के नाम रखकर दर्शकों को गुमराह किया जा रहा है। इस समस्या के प्रति सिक्खों का जागृत होना अति आवश्यक है। इसका बदल ढूंढने के लिए सिक्खों को कोशिश करनी चाहिए, ताकि दुनिया में सिक्खों द्वारा किए सबसे ज्यादा बहादुरी के कारनामे पूरी दुनिया के सामने आ सकें। दुनिया को पता चल सके कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा जो कहानी रूप में कथित नायक की सृजना कर उससे कारनामे करवाकर दिखाए जाते हैं वे तो सिक्खों ने यथार्थ रूप में बहुत पहले से ही करके दुनिया के सामने मिसालें पेश कर दी हैं। आवश्यकता है इनको दुनिया में घर-घर तक पहुंचाने के लिए सही तरीका ढूंढने की, ताकि हम समय के समानांतर बन अपना सभ्याचार कायम रखते हुए अपने अस्तित्व एवं बहादुरी का परचम लहराते रहें।

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

जिस परमात्मा का दर्शन प्राप्त करने हेतु कई जन्मों का जप-तप भी कम पड़े, जिसकी कृपा सर्वस्व त्याग करने के बाद भी कामना बन कर ही रह जाए, जिसकी खोज सभी नौ खंडों का भ्रमण कर लेने के बाद भी पूरी न हो, उसे प्रेम-भावना से ही पा लेना किसी अविश्वसनीय चमत्कार से कम नहीं। परमात्मा सृष्टि का सृजनकर्ता है, पालक है, रक्षक है और उद्धारक है। उसका स्वरूप क्या है, उसका स्थान क्या है और वह कैसे सृजन, पालन, रक्षा और उद्धार कर रहा है, इस पर संसार में आदि काल से ही बड़े भ्रम बने हुए थे। श्री गुरु नानक साहिब जी ने सारे भ्रम तोड़े और परमात्मा से मेल का सहज मार्ग बताया। उनकी बाणी में एक सिक्ख के आदर्श आचरण का विस्तार और गहराई से विवेचन किया गया है। उन्होंने सारे भ्रम एक सामान्य प्रश्न में समाहित किए-- *''किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।''* इसका उत्तर प्राप्त करने के लिये गुरु साहिब ने अधिक प्रतीक्षा नहीं कराई। उन्होंने आगे की ही पंक्ति में राह दिखा दिया-- *''हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि॥''* गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा का दास बन कर जीवन व्यतीत करना और परमात्मा में अटल विश्वास रखते हुए जीवन की हर स्थिति को उसका निर्णय समझ कर भावना से स्वीकार करना ही उद्धार का मार्ग है। श्री गुरु नानक साहिब ने जो सिद्धांत स्थापित किए उनसे सहमत व प्रभावित हो असंख्य लोग उनके अनुयाई बने, जिन्हें श्री गुरु नानक साहिब जी का शिष्य अथवा सिक्ख कहा गया। सिक्खों ने स्वयं को कर्मकांडों से दूर कर लिया, सामाजिक समानता का भाव धारण किया, आचरण को निर्मल किया और परमात्मा का नाम जप कर आत्मिक उत्थान की ओर बढ़ने लगे। सभी के जीवन बदलने लगे। श्री गुरु नानक साहिब जी के एक ऐसे सिक्ख भी थे जो अपना जीवन पूर्णत: बदलने में सफल रहे। श्री गुरु नानक साहिब जी की बाणी में जैसे आदर्श मनुष्य, सिक्ख की कल्पना उभरी थी, उसे उन्होंने शब्दश: साकार किया। उनका नाम था-- भाई लहिणा जी, जिन्हें बाद में श्री गुरु अंगद साहिब जी के नाम से जाना गया।

श्री गुरु अंगद साहिब जी के जीवन में यह परिवर्तन मात्र सात वर्षों में आया, जब उन्हें श्री गुरु नानक साहिब जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसके बाद का सारा समय श्री गुरु नानक साहिब जी के सानिध्य में व्यतीत हुआ। श्री गुरु अंगद साहिब जी से पूर्व भी अनेक समर्पित सिक्ख श्री गुरु नानक साहिब जी के दरबार में

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

उनकी कृपा से अपना जीवन संवारने में लगे हुए थे। श्री गुरु अंगद साहिब जी भी उसी मार्ग के साधक बने, किन्तु उनकी साधना की निर्मलता अतुल्य थी। आकाश से जब मेघ बरसते हैं तो बरसात की बूंदें एक समान धरती पर बरसती हैं। उस बरसात में कोई कितना भीगता है, यह भीगने वाले व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है। कोई एक ही होता है जो बरस रहे पानी की एक-एक बूंद को सहेज लेना चाहता है और बरसात को अनमोल अवसर जान कर उसमें पूरी तरह से भीग जाना चाहता है। उसे पानी की एक एक बूंद का मोल ज्ञात होता है। एक-एक बूंद में वह अपना जीवन देखता है। श्री गुरु अंगद साहिब जी के साथ भी ऐसा ही हुआ। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने जब पहली बार करतारपुर साहिब में श्री गुरु नानक साहिब जी के दर्शन किए तो उन्हें लगा कि साक्षात परमात्मा उनके सामने है। उनके और परमात्मा के मध्य कोई दूरी नहीं है। उन्हें श्री गुरु नानक साहिब जी का मुख दिव्य प्रकाश का ऐसा पुंज लगा, जिसमें समस्त ब्रह्माण्ड समाहित हैं। उन्हें लगा कि श्री गुरु नानक साहिब की बाणी में अमृत के असंख्य झरने फूट रहे हैं, जो अमरत्व प्रदान करने वाले हैं। श्री गुरु अंगद साहिब जी कुछ पलों में ही श्री गुरु नानक साहिब जी के दिव्य प्रकाश से ऐसे स्तब्ध हुए कि सदैव के लिए अपनी चेतना उनके चरणों में लीन कर दी :

त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि॥
मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि॥ (पन्ना १३९१)

श्री गुरु अंगद साहिब जी के अद्भुत समर्पण ने उनका अंतर सहज ही ज्ञान के अपार अमृत से भरपूर कर दिया। उनके अंदर के सारे भ्रम पलक झपकते ही दूर कर दिये और सारे अवगुणों, विकारों का नाश कर दिया। श्री गुरु अंगद साहिब जब श्री गुरु नानक साहिब जी के दर्शन करने आए थे तो खुले मन और मस्तिष्क से आये थे। भाई जोध जी से गुरबाणी का एक शबद सुन कर ही उनका मन भावना से भीग गया था। अब वे पूरी तरह से अमृत-वर्षा में भीगने को तैयार होकर आए थे। गुरबाणी में भी कहा गया है कि बर्तन जब सीधा रखा हो तभी वह भरता है। कोई बर्तन धीरे-धीरे भरता है, कोई आधा ही भरता है। किसी बर्तन का तल ही मुश्किल से भरता है। यह बात बर्तन के स्वामी पर भी निर्भर करती है। श्री गुरु अंगद साहिब जी का मन-बर्तन एकबारगी ही भर गया। यह घट-घट की जानने वाले श्री गुरु नानक साहिब जी की कृपा थी। श्री गुरु नानक साहिब जी के दरबार में प्रतिदिन अनगिनत सिक्ख आते थे, जिनके मन श्रद्धा से भरे होते थे। सभी के मन श्री गुरु नानक साहिब जी के दर्शन-मात्र की अमृत वर्षा से सराबोर नहीं होते थे, जैसे श्री गुरु अंगद साहिब जी के साथ हुआ। श्री गुरु नानक साहिब जी की दया-दृष्टि सभी के लिए समान थी, किन्तु श्री गुरु अंगद साहिब पर जैसी कृपा हुई वह भिन्न ही थी। इसका रहस्य श्री गुरु अंगद साहिब जी ने स्वयं प्रकट किया :

दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ।।
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ।।

भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ।।
नानकु कहै सिआणीऐ इव कंत मिलावा होइ ।।
(पन्ना १३९)

जिसके पैरों में दोष है, हाथ में बल नहीं है, नेत्रों में दृष्टि नहीं है, उससे कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वह दौड़ कर जाएगा और अपने प्रिय के गले लग जाएगा। उसकी गति मंद होगी। उसे दिशा खोजने में श्रम करना पड़ेगा, हाथों में शक्ति लानी पड़ेगी, ताकि वह गले लगा सके। हालांकि उसके मन में प्रियतम से मेल का चाव है, प्रियतम उसके सामने है, जिसे वह देख रहा है, सुन रहा है और उसके गुणों के बारे में जान भी रहा है, किन्तु बाधा उसकी अक्षमताओं की है। इस कारण वह अपने मन की अभिलाषा पूरी नहीं कर पाता। संसार में बहुत सारे लोग भक्ति करते हैं, किन्तु अपनी अक्षमताओं के कारण अपने लक्ष्य से दूर रहते हैं। उन्हें सच का ज्ञान है, धर्म की समझ भी है और मार्ग भी दिख रहा है, किन्तु विकारों और माया ने उन्हें (मानसिक रूप से) अपंग कर दिया है। पापों से दृष्टि-भ्रम हो गया है। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने कहा कि जिसने अपनी अपंगता दूर कर ली है उसका अपने प्रिय से मेल होने में विलंब नहीं होता। इसके लिये भय चाहिए, भावना चाहिए और अंतर-चेतना की आवश्यकता है। परमात्मा के भय में रहना आना चाहिए। जब सर्वत्र परमात्मा दृष्टिमान होने लगे, मनुष्य स्वयं ही पापों से विरत हो जायेगा। परमात्मा के दंड के भय से उस ओर उन्मुख ही नहीं होगा। वह सच के मार्ग पर चलने लगेगा। इस प्रकार परमात्मा का भय उसके पैरों का आकार ले लेगा। भक्त में भावना भी होनी चाहिए। मन के अंदर व्याप्त प्रेम ऊर्जा का कार्य करता है। प्रेम से प्रेरित मनुष्य कई बार असंभव कार्य भी सहजता से कर जाता है। उदाहरणत: सेवा सिक्ख पंथ का आधार-स्तम्भ है, जो प्रेम-भावना से ही संभव है। दिन-रात सेवा करने वाले सिक्खों की शक्ति उनके मन के अंदर का वाहिगुरु के लिए उमड़ रहा प्रेम ही है। परमात्मा के प्रति प्रेम-भावना शुभ कर्म करने योग्य बनाती है। इसके साथ ही अंतर-चेतना का जाग्रत होना भी आवश्यक है। अंतर-चेतना ही सच देख पाने की दृष्टि प्रदान करती है। परमात्मा की महानता देखने के लिये अंतर-दृष्टि चाहिए। इसके बिना मनुष्य मायावी संसार के रंगों के भ्रम में भटकता रहता है। श्री गुरु अंगद साहिब जी श्री गुरु नानक साहिब जी की शरण में भय, भावना और अंतर-दृष्टि के साथ सेवारत रहे थे। यह एक पूर्ण और अति दुर्लभ अवस्था थी, जिसने उन्हें परम पद, गुरुआई का अधिकारी बना दिया। श्री गुरु नानक साहिब जी से प्रभावित होकर उनका अनुयाई बन जाना एक बात थी। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने अनुयाई बनने से पूर्व एक बड़ा त्याग किया था अपने उस धार्मिक विश्वास का, जिसे उन्होंने अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त किया था और स्वयं भी अपने समुदाय के अगुआ के रूप में निभाते आए थे।

श्री गुरु अंगद साहिब जी का प्रकाश वैसाख वदी १, संवत् १५६१ विक्रमी को जिला श्री मुकतसर साहिब के गाँव सराय नागा (मत्ते दी सरां) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री फेरू मल्ल जी और माता का नाम माता सभराई जी था।

आपके पिता का व्यापार था। वयस्क होने पर आपका विवाह संघर गांव के श्री देवी चंद खत्री की सुपुत्री माता खीवी जी के साथ हो गया। श्री गुरु अंगद साहिब जी के पिता श्री फेरू मल्ल जी ज्वाला देवी के भक्त थे और अपने गांव से श्रद्धालुओं का जत्था लेकर देवी-दर्शन को जाया करते थे। डॉ. जोध सिंघ ने लिखा है कि श्री फेरू मल्ल जी न केवल देवता पुरुष थे, बल्कि उनका आचरण भी बहुत पवित्रता वाला था। श्री गुरु अंगद साहिब जी अठारह वर्ष के थे जब उनके पिता परलोक सिधार गए। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने देवी-दर्शन-यात्रा का अपने पिता द्वारा स्थापित क्रम जारी रखा। समाज में उनका सम्मान था। उनका व्यापार भी समृद्धि की ओर अग्रसर था। उनके पास सभी कुछ था, मगर आत्म-संतुष्टि नहीं थी। एक व्यग्रता मन को व्यथित किये रहती थी। संयोगवश जब भाई जोध जी द्वारा गाई जा रही गुरबाणी के शब्द उनके कानों में पड़े, व्यग्रता शांत होने लगी और उसके स्थान पर श्री गुरु नानक साहिब जी के दर्शन की उत्सुकता ने जन्म ले लिया। यह वो समय था जब उनके पास भरा पूरा परिवार था, जिसमें सुपत्नी, दो पुत्र व दो पुत्रियां थीं। आपकी संतानों में सबसे बड़े भाई दासू और सबसे छोटे भाई दातू थे।

श्री गुरु अंगद साहिब जी ने श्री गुरु नानक साहिब जी की बाणी सुन कर उनके दर्शन का मन बनाया। यह अवसर उन्हें कुछ समय में ही प्राप्त हो गया, जब वे अपने गांव के श्रद्धालुओं का जत्था लेकर देवी-दर्शन के लिये खडूर साहिब से निकले। राह में करतारपुर साहिब के निकट पड़ाव डाला। रावी नदी पार कर श्री गुरु अंगद साहिब जी श्री गुरु नानक साहिब जी के निवास-स्थान तक आ पहुंचे, जिसे धरमसाल कहा जाता था। उनके धरमसाल तक पहुँचने की कथा भी रोचक है। ऐतिहासिक स्रोतों और साखियों के अनुसार श्री गुरु अंगद साहिब जी को मार्ग में श्री गुरु नानक साहिब जी मिल गए जिन्हें वे पहचानते नहीं थे। श्री गुरु नानक साहिब जी से ही उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब के घर का पता पूछ लिया। श्री गुरु नानक साहिब जी अपना परिचय दिए बिना अति सहज भाव से उन्हें अपने घर ले आए। श्री गुरु अंगद साहिब जी घोड़ी पर बैठे हुए थे और श्री गुरु नानक साहिब जी उनकी घोड़ी की लगाम पकड़ कर पैदल चल रहे थे। जिनसे राह पूछी थी उन्हीं को श्री गुरु नानक साहिब जी के रूप में पाकर श्री गुरु अंगद साहिब (जिनका उस समय का परिचय भाई लहिणा जी के रूप में था) ऐसे भावविभोर हुए कि सदा के लिए जीवन-अवस्था ही बदल गई। उन्हें यह समझने में एक पल भी नहीं लगा कि गुरु कैसे सहज-भाव से राह दिखाता है। गुरु राह ही नहीं दिखाता, स्वयं साथ चलते हुए मंजिल तक भी पहुँचाता है। आवश्यकता है, बस, एक बार भरोसा कर अपने जीवन की बागडोर उसके हाथ में थमा देने की। श्री गुरु अंगद साहिब जी को जीवन का उद्देश्य मिल गया। उन्हें परमात्मा के मार्ग पर चलने के लिए सबल पैर, सेवा, सुकर्म के लिये सशक्त हाथ और परमात्मा की भक्ति में जुड़ने के लिए अंतर अवस्था प्राप्त हो गई। धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प उन्हें श्री गुरु नानक साहिब जी की बाणी

से प्राप्त हो गया। अब लक्ष्य सामने था, इसलिए सारे भ्रम, मोह टूट गए। श्री गुरु अंगद साहिब जी, श्री गुरु नानक साहिब जी के होकर रह गये। ज्वाला देवी की यात्रा वहीं समाप्त कर दी। स्व श्री गुरु नानक साहिब के चरणों में अर्पित कर दिया। उनका स्वयं का कुछ नहीं बचा। उनके साथ रह गया तो मात्र दासत्व-भाव। इस पूर्ण समर्पण के कारण ही श्री गुरु नानक साहिब जी के सभी आदेशों को उन्होंने बड़े चाव से पूर्ण किया। श्री गुरु नानक साहिब जी के किसी भी हुक्म को लेकर कभी न कोई दुविधा हुई, न ही कोई आशंका और न कोई तर्क। यह बहुत ही कठिन परीक्षा थी सिक्ख बनने की, जो स्वयं श्री गुरु नानक साहिब ने ली और निरंतर सात वर्ष तक ली। श्री गुरु अंगद साहिब को ज्ञात नहीं था कि क्या होने वाला है। उन्हें मात्र प्रसन्नता का अनुभव होता जब श्री गुरु नानक साहिब जी उनसे कोई सेवा लेते और उस सेवा को सम्पन्न करने में सफल होते। इससे प्राप्त होने वाला आनन्द ही उनके लिए जीवन की सबसे बड़ी प्राप्ति थी। परमात्मा के चरणों में समर्पण सबसे बड़े सम्मान का अधिकारी बनाता है :

सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार।।
कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार।।
जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु।।
नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु॥

(पन्ना १२३९)

श्री गुरु नानक साहिब जी ने स्वयं श्री गुरु अंगद साहिब जी को अपने निवास का पता बताया था और स्वयं अपने निवास तक लेकर आए थे। जिन पर श्री गुरु नानक साहिब जी की ऐसी महान कृपा हो उनका तो महानता प्राप्त करना निश्चित था। उन्हें श्री गुरु नानक साहिब जी ने ही सेवा का सौभाग्य प्रदान किया और यह सेवा ही उनके उत्कर्ष का कारण बनी। श्री गुरु अंगद साहिब जी के मन की भावना ने मोक्ष के सारे द्वार खोल दिए।

सेवा करते हुए और नाम जपते हुए श्री गुरु अंगद साहिब जी ने अपने आचार से सिक्ख की परिभाषा को जीवंत किया। यह श्री गुरु नानक साहिब जी का कौतुक ही था कि उन्होंने सच्चे सिक्ख को भौतिक रूप देने के लिए श्री गुरु अंगद साहिब जी का चयन किया और अपनी कृपा से उन्हें योग्यता की सीढ़ियां चढ़ाते गए। अंत में जब श्री गुरु अंगद साहिब जी की सिक्खी परिपक्व हो गई, उसे स्वीकार करते हुए श्री गुरु अंगद साहिब जी को अपना अंग, 'लहिणा' से 'अंगद' बनाते हुए उत्तरदायित्व सौंप दिया। इसके साथ ही उन्हें करतारपुर साहिब छोड़ खडूर साहिब चले जाने का हुक्म भी दे दिया। जो ईश्वरीय ज्योति अब तक करतारपुर साहिब में प्रकाशमान थी अब खडूर साहिब में प्रकाशित होने लगी :

दिता छोड़ि करतारपुरु बैठि खडूरे जोति जगाई।।

(भाई गुरदास जी, वार १ : ४६)

खडूर साहिब में श्री गुरु अंगद साहिब जी ने श्री गुरु नानक साहिब जी के पंथ को सुदृढ़ करने का कार्य किया और सिक्खों में गुरबाणी के प्रसार के विशेष प्रयास किए। उन्होंने कहा कि किसी विवशता, बाध्यता अथवा लोभ में की गई भक्ति

निरर्थक कर्म बन कर रह जाती है :

बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु।।
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु।।
(पन्ना ७८७)

भावना और समर्पण से की गई भक्ति ही परमात्मा को स्वीकार्य होती है। भावना और गुणों का दिखावा नहीं किया जा सकता। वे स्वयं ही प्रकट होते हैं और अपनी सत्यता को सिद्ध करते हैं। भावना को श्री गुरु अंगद साहिब जी ने एक विशेष अवस्था के रूप में देखा, जो संसार में रहते हुए भी संसार से विरत रहने वाली और सांसारिक परिस्थितियों पर आश्रित न रहने वाली अवस्था है। इसे निर्लिप्तता में संलिप्तता भी कहा जा सकता है। संसार से निर्लिप्तता और संसार में आने के उद्देश्य से संलिप्तता। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने अपनी बाणी में इसे विलक्षण ढंग से प्रकट किया :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा।।
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा।।
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा।।
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा।।
(पन्ना १३९)

परमात्मा का भक्त परमात्मा के सर्वव्यापक रूप को सर्वत्र देखने और उसके हुक्म को जान कर आत्मसात करने की क्षमता रखता है। वह संसार के रंग-तमाशों और पदार्थों के शोर में नहीं उलझता। उस ओर से अपने नेत्र और कान बंद रखता है। उसका गंतव्य मात्र परमात्मा का दर है। वह किसी और दर का याचक नहीं बनता। संसार के भोग-विलास और पाप-कर्मों से दूर रह कर वह केवल सदाचार के लिए ही अपनी शक्ति का उपयोग करता है। श्री गुरु अंगद साहिब जी ने कहा कि इसके लिए परमात्मा की इच्छा में आनन्दित रहना ही एकमात्र निदान है। परमात्मा की आज्ञा में रह कर ही जीवन सार्थक होता है। इस अवस्था में ही परमात्मा की शरण और कृपा प्राप्त होती है।

खडूर साहिब में श्री गुरु अंगद साहिब जी का जीवन अति सरल और सहज था। बच्चों के साथ समय व्यतीत करना और युवकों को कसरत के लिये प्रेरित करना उनकी दिनचर्या में शामिल था। गुरु साहिब ने बच्चों को गुरमुखी लिपि का अक्षर-ज्ञान कराने में विशेष रुचि ली। उनकी प्रेरणा थी कि सहनशीलता और क्षमाशीलता सिक्खों में भरपूर होनी चाहिए। श्री गुरु अंगद साहिब जी का आभा-मंडल पूरे संसार को प्रकाशित करने वाला था :

होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ॥
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ॥
(पन्ना ९६७)

पूरा ब्रह्मांड श्री गुरु अंगद साहिब जी की महिमा कर रहा था। उनका प्रताप कण-कण आलोकित कर रहा था। गुरु साहिब जन्मों-जन्मों के पाप क्षमा करने वाले और सारी सृष्टि का उद्धार करने वाले थे। अपने स्थान पर श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई पर आसीन कर आप ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी में पेश जीवन-दर्शन

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी द्वारा उच्चरित बाणी १५ रागों में दर्ज है। उनकी बाणी के ५९ शबद और ५७ सलोक (श्लोक) हैं। उनकी बाणी सुख-दुख दोनों में हमारा मार्गदर्शन करती है। उनके सलोकों को 'भक्ति की पराकाष्ठा' की अद्भुत अनुभूति व अभिव्यक्ति के तौर पर व्याख्यायित किया जा सकता है। गुरु जी के ये सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में पन्ना १४२६ से लेकर १४२९ तक सुशोभित हैं। वे अपने एक सलोक में फरमान करते हैं :

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि।।
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु।।
(पन्ना १४२६)

उपरोक्त सलोक में नवम् पातशाह फरमान करते हैं कि ऐ मानव! तुम बाल्यावस्था एवं युवावस्था को पार कर वृद्धावस्था में पहुँच चुके हो। तुम्हारा अंतिम समय निकट आ रहा है। फिर भी तुमने अभी तक प्रभु को पाया नहीं है, उसका नाम जपा नहीं है। तुम्हारा इस धरती पर आना व्यर्थ सिद्ध हुआ है, क्योंकि तुम नाम (भक्ति) से वंचित हो। तुम्हारा पैदा होना या न होना एक समान है। तुमने प्रभु को भुला दिया है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का एक और पावन कथन है :

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ।।
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ।।
(पन्ना १४२६)

अर्थात् ऐ मानव! जितने भी सुख तुम्हें प्राप्त हुए हैं, ये सब प्रभु की कृपा-दृष्टि की बदौलत हैं। तुम्हें उसे भुला दिया है। उसकी कृपा के बिना तुमने एक भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। सारे सुख वही दे सकता है, अन्य कोई नहीं। उसका नाम-सिमरन करने से ही तुम्हारा जीवन सार्थक हो सकता है।

गुरु जी की बाणी का मुख्य आशय व मनोरथ मनुष्य को सांसारिक मोह-माया से निर्लिप्त रहकर प्रभु-भक्ति की ओर लगाना है :

— रे मन राम सिउ करि प्रीति।।
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति।।
(पन्ना ६३१)

— हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो।।
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो।।
(पन्ना ७२७)

गुरु जी पावन वचनों द्वारा उपदेश देते हैं कि ऐ मानव! तुम केवल परमात्मा के नाम का सहारा लो! उसके सिमरन से कुबुद्धि (दुरमति) दूर होती है तथा निर्वाण पद की प्राप्ति होती है :

रे मन ओट लेहु हरि नामा।।
जा कै सिमरनि दुरमति नासै
पावहि पदु निरबाना।। *(पन्ना ९०१)*

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

परमात्मा की प्राप्ति के लिए कर्मकांडों की कतई जरूरत नहीं है, बल्कि उसे तो अपने भीतर से ढूंढा जा सकता है। बेशक वह निर्गुण (निराकार) है, फिर भी वह मनुष्य के भीतर मौजूद रहता है। जरूरत उसे खोजने तथा अपने भीतर की यात्रा करने की है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी हमें मार्ग सुझाते हैं :

काहे रे बन खोजन जाई।।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई।।
(पन्ना ६८४)

नवम पातशाह जी का परम परमात्मा में अटूट विश्वास है, उसकी कृपा पर पूर्ण भरोसा है। उनका पावन कथन है कि यह सच तो संत भी पुकार-पुकार कर बयान करते हैं कि वह कण-कण में मौजूद है। उसकी भक्ति-आराधना करने पर ही भवसागर से पार जाया जा सकता है :

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।
(पन्ना १४२७)

वे अति उत्तम दार्शनिक ढंग से संसार की और इसकी प्रत्येक वस्तु की नष्ट हो जाने की बात हमें समझाते हैं। वे बाणी में फरमान करते हैं कि जो कोई भी पैदा हुआ है, उसने आज नहीं तो कल नष्ट होना ही है :

— जो उपजिओ सो बिनसि है
परो आजु कै कालि।।
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल।।
(पन्ना १४२९)

— कां को तनु धनु संपति कां की
का सिउ नेहु लगाही।।
जो दीसै सो सगल बिनासै
जिउ बादर की छाही।। *(पन्ना १२३१)*

जिस प्रकार बादलों की छांव थोड़ी देर के लिए रहती है, इसी प्रकार दृष्टिगोचर हर वस्तु थोड़े समय के लिए है। उसे समाप्त होना ही है। भगवान के बिना कुछ भी स्थिर नहीं है। इस जगत को एक स्वप्न की बांति समझना चाहिए :

— इहु संसारु सगल है सुपनो
देखि कहा लोभावै।। *(पन्ना १२३१)*
— जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि।।
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान।।
(पन्ना १४२७)

इस संसार के दो पक्ष हैं। एक बाहरी तथा दूसरा आंतरिक अर्थात् एक स्थूल एवं दूसरा सूक्ष्म। बाहरी पक्ष नष्ट होने वाला होता है। भीतरी पक्ष वह है, जिसमें भगवान् रमा हुआ नज़र आता है। गुरु जी बाणी में फरमान करते हैं :

साधो रचना राम बनाई।।
इकि बिनसै इक असथिरु मानै
अचरजु लखिओ न जाई।। *(पन्ना २१९)*

गुरु जी का एक-एक फरमान अति महान् है। उनका बाणी में एक और फरमान है कि तीर्थ-स्थलों पर जाकर स्नान करना, व्रत रखना और दान कर मन में अभिमान करना-- यह सब पाखंड है, आडंबर है। ऐसा करने से प्रभु को नहीं पाया जा सकता। हाथी जब नदी में नहाता है, तब वह अपने ऊपर कीचड़ भी डाल लेता है। लालच, मोह, अहंकार भी तो कीचड़ के समान है। प्रभु को सच्ची व निर्मल भावना से पाया जा सकता है :

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु।।

नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु।।

(पन्ना १४२८)

मनुष्य का जीवन पानी के एक बुदबुदे (बुलबुले) जैसा है, जो पानी में से पैदा होता है और फिर पानी में ही समा जाता है। गुरु जी इस रहस्य को यूं उजागर करते हैं :

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।।
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत।।

(पन्ना १४२७)

मानवीय जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है। ऐ मानव! यदि तू सच्चा व परम सुख प्राप्त करना चाहता है और मानवीय तन पाकर ऐसा कर भी सकता है, तो तुझे परमात्मा की शरण में आना पड़ेगा। ऐसा अमूल्य विचार श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी निम्नलिखित सुंदर शब्दों में बख्शिश करते हैं :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह।।
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह।।

(पन्ना १४२७)

उनका एक और अति पावन-पुनीत कथन है :

बाल जुआनी अरु बिरधि
फुनि तीनि अवसथा जानि।।
कहु नानक हरि भजन
बिनु बिरथा सभ ही मानु।। *(पन्ना १४२८)*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की पावन बाणी का अध्ययन, चिंतन-मनन करते हुए यह तथ्य सामने आता है कि इंसान को जो यह जीवन प्राप्त हुआ है, उसको सार्थक करने का ढंग (जो सहज व सरल भी है) यही है कि प्रभु का नाम सच्चे हृदय से जपा जाए। मन को ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, द्वेत जैसे अवगुणों से दूर व मुक्त रखा जाए। प्रभु की भक्ति के बिना हमें अनेक कठिनाइयों एवं दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है। जब वाहिगुरु की हम पर कृपा हो जाती है, तब हमारी प्रत्येक मुश्किल आसान हो जाती है। हम मानव उसकी कृपा-दृष्टि के पात्र बनें! शेष सभी तथाकथित 'योग्यताओं' का न तो कोई अर्थ है और न ही कोई महत्व।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की रचित बाणी का मुख्य पक्ष मानव को सांसारिक मोह-माया से छुटकारा दिलाकर परमात्मा की स्तुति में लगाना है। उनकी बाणी यह भी प्रेरणा व आगवानी देती है कि संसार में रहते हुए गुरमति के अनुसार गृहस्थ धर्म निभाना है। घर-द्वार त्याग कर और जंगलों में रहकर त्याग व सन्यास का पाखंड करने से कभी मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने यह भी परम उपदेश दिया है कि प्रशंसा और निंदा, दोनों स्थितियों में मन को सम व स्थिर रखना है। अपनी बाणी में गुरु जी फरमान करते हैं कि अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा-चुगली सुनकर मनुष्य का मन अति प्रसन्न हो जाता है। यह भावना सही नहीं है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की रचित बाणी दुख व सुख, जीवन व मृत्यु, धर्म व अधर्म, सत्य व असत्य, न्याय व अन्याय आदि के विषय में हमें भरपूर जानकारी देती है, प्रत्येक विपदा व मुश्किल में हमें हौसला व सहारा देती है। उनका प्रत्येक वचन अनमोल है :

संग सखा सभि तजि गए
कोऊ न निबहिओ साथि।।
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ।।

(पन्ना १४२९)

भक्त धंना जी

*-डॉ. शमशेर सिंघ **

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा गुरु साहिबान के संग भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान और गुरु-घर के निकटवर्ती सिक्ख सेवकों की बाणी को दर्ज करना महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य था। कथित पिछड़ी और निम्न जातियों में से होने के कारण भी भक्त साहिबान द्वारा उच्चरित बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सम्मिलित करना बहुत बड़ी और गहरी सोच का परिणाम था। यह राष्ट्रीय और विश्वव्यापी स्तर पर एक ऐसा कदम था, जिसके साथ मानव-एकता और समानता को और बल मिला। मानवता को यह एक ख़ास संदेश व उपदेश था कि धार्मिक अनुभव तथाकथित उच्च जातीय तथा ज्ञानमयी साधकों की निजी मलकियत नहीं है। जिज्ञासा, श्रद्धा, नम्रता और आत्मसमर्पण करने वाले भक्त-जन भी इस दैवी खजाने के हिस्सेदार हैं।

भक्ति-लहर दक्षिण (आलवार) से १४वीं सदी में अस्तित्व में आई, जो कि रामानुज से बढ़ती हुई भक्त रामानंद जी के माध्यम से उत्तरी भारत में पहुँची। भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त पीपा जी, भक्त धंना जी आदि भक्त साहिबान भक्त रामानंद जी के शिष्य थे। इन संतों-भक्तों के विचारों और बाणी में अपने क्षेत्र की पृष्टभूमि एवं सभ्याचार का प्रभाव तो था, परंतु विचारधारा सबकी मिलती-जुलती थी। धार्मिक पक्ष से यह निर्गुण भक्ति थी। मूर्ति-पूजा का खंडन, कर्म कांडों का निषेध, एक परमात्मा की भक्ति में अटल विश्वास एवं प्रेम था। जांत-पाँत का विरोध ही नहीं, बल्कि खंडन भी था। समकालीन हुकूमत द्वारा तंग किए जाने का भी ज़िक्र मिलता है।

भक्ति-लहर के इन संतों-भक्तों का प्रभु में अटल विश्वास होने के कारण इनकी बाणी में परमात्मा के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द तो भारतीय परंपरा के साथ जुड़े हुए हैं, परंतु इनकी वास्तविक विचारधारा निर्गुण भक्ति की है। इस विचारधारा को मुख्य रख कर ही इन भक्त साहिबान की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज किया गया है। हमने यहाँ भक्त धंना जी के बारे में उल्लेख करना है।

भाई कान्ह सिंघ नाभा रचित 'महान कोश' के अनुसार भक्त धंना जी का जन्म गाँव धूआन (धूआं कलां, राजस्थान) में हुआ। चाहे इनके जीवन में कुछ सगुण पूजा के विचार भी सुनने व पढ़ने को मिलते हैं, परंतु वहाँ उनका केवल परमात्मा के प्रति विश्वास और श्रद्धा ही प्रकट होती है। उनके केवल तीन शबद-- दो आसा राग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में पन्ना ४८७-४८८ पर और एक धनासरी राग में पन्ना ६९५ पर दर्ज किया गया है। इतना हवालों से स्पष्ट होता है कि भक्त धंना जी

**१३३, लाँग स्ट्रीट, शेखूपुरा, डाक : पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला— १४७००२, फोन : ९८८८४-३८१५७*

साधु-जन की संगत कर जीवन-मुक्त हो गए। श्री गुरु रामदास जी बाणी में फरमान करते हैं :

जो जो मिलै साधू जन संगति
धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥
(पन्ना ८३५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त धंना जी की श्रद्धा, भोलापन, प्रभु पर अटल विश्वास का वर्णन करते हुए फरमान किया है कि परमात्मा शुद्ध हृदय में ही निवास करता है :

-इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥
(पन्ना ४८८)
-धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ (पन्ना ११९२)

भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में भक्त धंना जी के बारे में कई स्थान पर वर्णन किया है :

-धंना जटु उधारिआ सधना जाति अजाति कसाई। (वार १२:१५)
-ठाकुर दी सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी मै भि देह इक जे तुधु भावै।
(वार १०: १३)

आसा राग के शबद में भक्त धंना जी का कथन है कि मन का भौतिक पदार्थों में लालचवश लिप्त होने से आवागमन का चक्कर बना रहा, लालची मन संकल्प-विकल्प चितवन करता रहा। पाँच विकार विष के समान हैं। इस कारण तन भस्म हो गया, धन नाश हो गया, मन में प्रभु का प्रकाश न हो सका। लालची मन को विकार मीठे लगते रहे, इसी कारण आचार-विचार नहीं समझ सका और जन्म-मरण का चक्कर चलता रहा। जन्म-मरण से छुटकारा पाने की युक्ति नहीं जानी और न ही मन में प्रभु-नाम बसाया। तृष्णा के जंजाल में फंसा रहा। पदार्थों का मोह विष के समान था, परंतु यह मन को मीठा लगता रहा। मन में परमात्मा का निवास न हो सका।

भक्त जी गुरु की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि आवागमन से मुक्त होने की युक्ति गुरु के द्वारा ही प्राप्त होती है। परमात्मा की कृपा और नेक पुरुषों की संगत के माध्यम से ज्ञान का प्रवेश मन में हो गया। उसका मनन करने से प्रेमा-भक्ति धारण की और आत्म-सुख को जान लिया। तृप्ति हो गई। प्रभु-ज्योति साक्षात प्रकट हो गई। प्रभु को पहचान लिया :

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने
तनु मनु धनु नही धीरे ॥
लालच बिखु काम लुबध राता
मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१ ॥रहाउ ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे
चार बिचार न जानिआ ॥
गुन ते प्रीति बढी अन भांती
जनम मरन फिरि तानिआ ॥१ ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी
जलत जाल जम फंध परे ॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे
परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२ ॥
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ
धिआनु मानु मन एक मए ॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ
त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३ ॥
जोति समाइ समानी जा कै
अछली प्रभु पहिचानिआ ॥

धंनै धनु पाइआ धरणीधरु
मिलि जन संत समानिआ ॥ (पन्ना ४८७)

दूसरे शबद के माध्यम से भक्त जी परमात्मा के सिमरन पर ज़ोर देते हैं। परमात्मा दयालु, कृपालु और रोज़ी देने वाला बताया है। परमात्मा के प्रति असीम विश्वास प्रकट किया है। इस विश्वास को जीव-जंतु और पत्थर की उदाहरण दे कर यह स्पष्ट किया है कि प्रभु माता के गर्भ में जठराग्नि में भी में ख़ुराक पहुंचाता है। मादा कछुआ तो पानी में रहता है, परंतु बच्चे बाहर रेत पर पलते हैं। वहाँ परमात्मा ही उनकी रक्षा करता है। तीसरा, पत्थर में कीटों को ख़ुराक पहुंचाने वाला परमात्मा ही है। पत्थर में किसी तरफ़ से भी ख़ुराक पहुंचाने का साधन नहीं होता, परंतु वहाँ भी कीट पलते हैं :

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर
बिबहि न जानसि कोई ॥
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ
करता करै सु होई ॥१ ॥रहाउ ॥
जननी केरे उदर उदक महि
पिंडु कीआ दस दुआरा ॥
देइ अहारु अगनि महि राखै
ऐसा खसमु हमारा ॥१ ॥
कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि
पंख खीरु तिन नाही ॥
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२ ॥
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता
ता चो मारगु नाही ॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥३ ॥
(पन्ना ४८८)

भक्त धंना जी का तीसरा शबद धनासरी राग में है। यह शबद आरती के माध्यम से भी गाया जाता है। इसके साथ भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सैण जी और भक्त पीपा जी के शबद भी हैं। भक्त धंना जी ने अपने सरल स्वभाव के अनुसार परमात्मा से दाल, राशन, घी, अन्न, दूध और दुधारू गाय-भैंस, सवारी के लिए घोड़ी और गृहस्थ के लिए सुघड़-समझदार जीवन-साथी की माँग की है। इसके साथ जूते, कपड़ा आदि बुनियादी ज़रूरतों की भी माँग की है। गुरमति गृहस्थियों का धर्म है। इसमें रोटी, कपड़ा और मकान बुनियादी ज़रूरतें हैं। भक्त धंना जी के तीन शबद मानव जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों की पुष्टि करते हैं। भाषा सरल है, जो कि गुरमति के जिज्ञासुओं के लिए बड़े प्रभावशाली ढंग के साथ प्रस्तुत की है। भक्त जी के अनुसार भूखे रह कर भक्ति नहीं हो सकती। भक्ति के लिए बुनियादी ज़रूरतों की पूर्ति होना आवश्यक है :

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते
तिन के काज सवारता ॥१ ॥रहाउ ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥१ ॥
गउ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥ (पन्ना ६९५)

पांच प्यारे

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

संवत् १७५६ की वैसाखी वाले दिन दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब में एक अद्भुत कौतुक रचा। तत्कालीन सारा सिक्ख-समाज, जिसकी तादाद अस्सी हज़ार से भी ऊपर थी, वैसाखी के पर्व पर गुरु-नगरी में एकत्र हुआ था। दशम पातशाह ने हुक्मनामे भेज कर सारे सिक्ख समुदाय को श्री अनंदपुर साहिब में एकत्र होने का आमंत्रण दिया था।

दीवान सजे हुए थे। तभी दशमेश पिता ने उठ कर सिक्खों को संबोधित करते हुए कहा कि धर्म और मानवता की रक्षा के लिए मुझे पांच शीश चाहिए। नंगी कृपाण लहराते हुए रौद्र रूप में गुरु जी ने ललकारा कि कौन मुझे शीश देने के लिए तैयार है?

विशाल भीड़ में सन्नाटा पसर गया। लोग घबरा गए। गुरु जी ने पुन: गरजते हुए शीश की मांग की। आख़िर सहमे हुए उस जनसमुदाय में से एक सिक्ख ने साहस किया और उठ कर बोला कि मैं शीश देने के लिए प्रस्तुत हूं। गुरु के चरणों में शीश अर्पित करने वाले ये सबसे पहले सिक्ख थे-- भाई दया राम।

इसके बाद गुरु जी के आह्वान पर एक-एक करके चार सिक्ख और उठे तथा गुरु-चरणों में शीश अर्पित करने के लिए तत्पर हुए। ये चार सिक्ख थे-- भाई धरम दास, भाई हिम्मत राय, भाई मुहकम चंद, भाई साहिब चंद।

दशमेश पिता ने इन पांचों सिक्खों को खंडे-बाटे का अमृत छकाया और सिंघ सजा दिया। अमृत छक कर ये बन गए- भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई हिम्मत सिंघ, भाई मुहकम सिंघ और भाई साहिब सिंघ।

गुरु जी ने इन्हें 'पांच प्यारे' कह कर संबोधित किया। फिर दशमेश पिता ने स्वयं इन 'पांच प्यारों' को गुरु-रूप मानते हुए इनसे अमृत छका और स्वयं भी 'गोबिंद राय' से 'गोबिंद सिंघ' बन गये।

१. भाई दया सिंघ

भाई दया सिंघ का जन्म सन् १६६१ ईस्वी में लाहौर के निकट डल्ला गांव में पिता श्री सुद्धा खत्री और माता दिआली के घर हुआ। पिता सुद्धा नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी के समर्पित श्रद्धालु थे।

भाई दया सिंघ का बचपन अपने गाँव में ही बीता। सन् १६७७ ईस्वी में जब ये सोलह बरस के हुए, तो ये भी श्री अनंदपुर साहिब आ गये और गुरु-घर की सेवा में जुट गए।

भाई दया सिंघ हर समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में ही रहते। भाई साहिब हर मुहिम में गुरु जी के साथ रहे और हर युद्ध में बड़ी बहादुरी से लड़े, चाहे वह भंगाणी का युद्ध (१६८९ ई.) हो, नादौन का युद्ध (१६९० ई.) हो या फिर हुसैनी का युद्ध (१६९५ ई.) हो। यह भाई साहिब का समर्पण ही था, जिसने १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

सबसे पहले गुरु-चरणों में शीश अर्पित करने के लिए प्रेरित किया।

सन् १७०४ ईस्वी में श्री अनंदपुर साहिब की घेराबंदी के दौरान भी आप दशमेश पिता के साथ ही थे। दिसंबर, १७०४ ई. में जब गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ने का निश्चय किया तब भाई दया सिंघ ने गुरु जी के साथ ही रहने का फैसला किया। सरसा नदी की मुठभेड़ के बाद भाई जी गुरु जी के साथ चमकौर की गढ़ी में पहुंचे। भाई जी ने चमकौर का युद्ध बड़ी वीरता से लड़ा।

जब दशमेश पिता को चमकौर की गढ़ी छोड़नी पड़ी तब भाई साहिब गुरु जी के साथ-साथ पहले श्री मुकतसर साहिब पहुंचे और फिर वहां से तलवंडी साबो चले गए।

सन् १७०५ ईस्वी में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगजेब की मानवता विरोधी नीतियों का विरोध करते हुए औरंगजब को फारसी में एक लंबा ख़त लिखा। यह ख़त लौहगढ़ (दीना) नामक स्थान पर लिखा गया और इतिहास में 'ज़फ़रनामा' नाम से प्रसिद्ध है।

भाई दया सिंघ ही वे बहादुर सिक्ख थे जो 'ज़फ़रनामा' लेकर दक्षिण गए और औरंगजेब को यह ख़त देकर आए।

इसके बाद भी भाई साहिब गुरु जी के पास ही रहे और अपने अंतिम समय तक गुरु जी की सेवा करते रहे। सन् १७०८ ईस्वी में, ४७ वर्ष की आयु में गोदावरी नदी के तट पर स्थित 'अबिचल नगर साहिब नांदेड़' में भाई दया सिंघ अकाल चलाणा कर गये।

२. भाई धरम सिंघ

भाई धरम सिंघ का जन्म सन् १६६९ ईस्वी में मेरठ क्षेत्र के हस्तिनापुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री संतराम और माता का नाम माई साभो या माई जस्सी था। प्रो. करतार सिंघ भाई साहिब का जन्म-स्थान दिल्ली मानते हैं। यह निश्चित है कि भाई धरम सिंघ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गंगा-यमुना दोआब के रहने वाले थे।

भाई धरम सिंघ का बचपन अपने गाँव में ही बीता। मात्र १२ बरस की आयु में ये दशमेश पिता की शरण में चले आए। इसके बाद भाई साहिब जीवन भर दशमेश पिता की सेवा में रहे।

इतनी छोटी आयु में गुरु-घर को समर्पित हो जाने के कारण स्पष्ट अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके माता-पिता और पूर्वज पहले से ही गुरु-घर के श्रद्धालु रहे होंगे।

दशमेश पिता की सेवा में रहते हुए भाई साहिब ने युद्ध-कला का अभ्यास किया और उच्च कोटि के योद्धा के रूप में उभरे। भाई साहिब ने दशमेश पिता के नेतृत्व में लड़े गये सारे युद्धों में हिस्सा लिया और हर बार अपनी बहादुरी का लोहा मनवाया।

सन् १७०४ के श्री अनंदपुर साहिब के युद्ध में भी भाई साहिब ने बड़ी बहादुरी दिखाई। फिर चमकौर का युद्ध लड़ा, खिदराणे की ढाब यानी श्री मुक्तसर साहिब की जंग की और तलवंडी साबो होते हुए गुरु जी के साथ ही दक्षिण में नांदेड़ चले गए।

भाई धरम सिंघ और भाई दया सिंघ अंतिम समय तक गुरु जी की सेवा में रहे।

नांदेड़ में दशमेश पिता के ज्योति-जोत समाने के कुछ ही समय बाद भाई धरम सिंघ अकाल चलाणा कर गये।

३. भाई हिम्मत सिंघ

भाई हिम्मत सिंघ का जन्म जगन्नाथपुरी

(उड़ीसा) में सन् १६६१ ईस्वी में हुआ। प्रो. करतार सिंघ के अनुसार ये द्वारिका के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्री गुलजारी और माता का नाम माई धंनो था।

भाई साहिब लंबे समय से दशमेश पिता की सेवा में थे। सतत् युद्ध-कला के अभ्यास ने इन्हें एक विकट योद्धा बना दिया। भाई साहिब ने भी दशमेश पिता के नेतृत्व में सारे युद्ध बड़ी वीरता से लड़े।

भाई साहिब ने दशमेश पिता के साथ ही दिसंबर, १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब छोड़ा और चमकौर साहिब पहुंचे। यहां भाई बुधी चंद की हवेली में सिर्फ़ चालीस सिंघों के साथ लाखों के मुगल लश्कर के विरुद्ध जंग लड़ी।

यह युद्ध बड़ा अद्भुत था। सिक्ख पांच-पांच के जत्थे के रूप में बाहर निकलते और शत्रु पर टूट पड़ते। अनगिनत शत्रुओं को मौत के घाट उतारते-उतारते शहीद हो जाते। सारा दिन यह युद्ध चला। दस लाख का लश्कर चालीस सिंघों को हराकर गढ़ी पर कब्ज़ा नहीं कर सका।

इसी सिलसिले में साहिबज़ादा बाबा जुझार सिंघ के नेतृत्व में भाई हिम्मत सिंघ, भाई साहिब सिंघ तथा अन्य तीन सिंघों के साथ बाहर निकले और मैदान-ए-जंग में कूद पड़े। भाई साहिब ने बेमिसाल बहादुरी का परिचय देते हुए अन्य सिंघों के साथ शहादत प्राप्त की।

४. भाई मुहकम सिंघ

भाई मुहकम सिंघ का जन्म सन् १६६३ ईस्वी में द्वारिका, गुजरात में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री तीरथ चंद था। ये सन् १६८५ ईस्वी में श्री अनंदपुर साहिब आए और फिर यहीं के होकर रह गए। भाई साहिब निरंतर सेवा-कार्यों में जुटे रहते।

युद्ध-कला इन्हें विशेष रूप से प्रिय थी, इसलिए ये एक महान योद्धा के रूप में उभरे। दशमेश पिता के नेतृत्व में जितनी भी लड़ाइयां लड़ी गईं, उन सबमें भाई मोहकम सिंघ ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी बहादुरी के कारनामे दिखाए।

श्री अनंदपुर साहिब छोड़ते समय आप दशमेश पिता के साथ थे।

चमकौर साहिब के युद्ध में भाई साहिब ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया। गुरु-पिता की आज्ञा से जब बड़े साहिबज़ादे बाबा अजीत सिंघ जी पांच सिंघों के साथ युद्ध-भूमि में निकले तो भाई साहिब भी साथ थे। अनगिनत शत्रुओं को मौत के घाट उतारते-उतारते बाबा अजीत सिंघ जी के साथ भाई मुहकम सिंघ भी शहादत प्राप्त कर गये।

५. भाई साहिब सिंघ

भाई साहिब सिंघ कर्नाटक के नगर बिदर के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्री चमन राम और माता का नाम माई बिशन देई था। यह परिवार आरंभ से ही गुरु-घर का श्रद्धालु था।

भाई साहिब शुरू से ही कुशल योद्धा और बहादुर जत्थेदार थे। भंगाणी के युद्ध में भाई साहिब ने अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया था। इसके अलावा उन्होंने दशमेश पिता के नेतृत्व में सभी युद्धों में हिस्सा लिया और अपनी बहादुरी का लोहा मनवाया।

चमकौर साहिब के युद्ध में दूसरे साहिबज़ादे बाबा जुझार सिंघ जी के नेतृत्व में युद्ध करते हुए भाई हिम्मत सिंघ के साथ-साथ भाई जी ने भी शहादत प्राप्त की।

इस प्रकार दशमेश पिता ने 'खालसा' सृजन के रूप में लोक-संघर्ष के जिस महान आंदोलन की नींव रखी, उस नींव के समर्पित मील-पत्थर थे।

पंथ की जीत

*-सतविंदर सिंघ फूलपुर**

'पंथ की जीत' पंथ-प्यारों की प्रार्थना है। यह 'खालसा पंथ' की चढ़दी कला और इसके विजेता रहने की अकाल पुरख के समक्ष विनती है, जो समूचा सिक्ख जगत रोज़ाना अरदास में करता है। अध्यात्म मार्ग के पथिक खालसा पंथ ने विषय-विकारों के साथ जंग कर इन पर विजय प्राप्त करनी है और गुरु-प्रदत्त रूहानी मिशन में रुकावट बनने वाली पंथ-विरोधी ताकतों के मंसूबों को भी पराजित करना है।

गुरु साहिबान से पहले भी देश में शूरवीर हुए थे, धर्म-कर्म भी मौजूद था, मगर लोग फिर भी विषय-विकारों में गलतान थे, ज़ुल्म और कुरीतियां भी बरकरार थीं। फिर सोचना पड़ेगा कि वह कौन-सी खास बात थी जिस कारण खालसा पंथ ने विषय-विकारों को पछाड़ कर रूहानियत के शिखर को छुआ और दुनियावी विजेता बन कर सदियों से देश में व्याप्त ग़ुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंका। पहले मुग़ल राज और फिर अंग्रेज़ हुकूमत की जड़ें उखाड़ कर इस देश को आज़ाद करवाया। वह ख़ास बात थी-- नाम-सिमरन की बरकत, गुरबाणी का भरोसा, अमृत की शक्ति और उच्च नैतिक गुरमति जीवन-जाच। सामूहिक रूप से रूहानी जीवन का दान रोज़ाना अरदास में ''सरबत्त खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित्त आवे'' और ''सिक्खां नूँ सिक्खी दान, केस दान, रहित दान, बिबेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानां सिर दान नाम दान, श्री अमृतसर जी दे स्नान, चौंकियां , झंडे, बुंगे, युगो युग अटल'' . . . के माध्यम से अकाल पुरख जी से मांगते हैं। जब तक उपरोक्त रूहानी नियामतें खालसा पंथ की झोली में रहेंगी, तब तक 'धरम का जैकार' (धर्म की जयकार) रहेगा, 'पंथ की जीत' रहेगी और पंथ चढ़दी कला में रहेगा।

हमारा इतिहास गवाह है कि जब तक खालसा-पंथ की झोली में उपरोक्त नियामतें रहीं, तब तक अति कठिन समय में भी पंथ चढ़दी कला में रहा। गुरबाणी और नाम-सिमरन के बल पर पंथ की जीत और धर्म का जैकार कराने के लिए हमारे पुरखों ने जो चढ़दी कला वाला इतिहास सृजित किया है, उसकी मिसाल कम से कम इस ब्रह्मांड में तो नहीं मिलती। हम रोज़ाना अरदास में अपने धर्मी पुरखों को याद करते हैं-- ''जिन्हां सिंघां सिघनीआं ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद-बंद कटाए, खोपरियाँ लुहाईआं, चरखियां 'ते चढ़े, आरिआं नाल चिराए गए, गुरुद्वारिआं दी सेवा लई कुर्बानियां कीतियां, धर्म नहीं हारिआ, सिक्खी केसां सुआसां नाल निबाही . . .।''

जिस पंथ के पास इतना गौरवमयी इतिहास हो, वह कभी पतनोन्मुख की तरफ जा ही नहीं

*संपादक। फोन : ९९१४४-१९४८४

सकता। यदि उसके पैरोकार गुरु-दर्शाए गुरमति मार्ग पर चलते रहें, जीवन धार्मी बना रहे। जब मुग़ल हुकूमत कहती थी की सिंघ ख़त्म कर दिए गए हैं तब भी दो धार्मिक योद्धा-- बाबा बोता सिंघ और बाबा गरजा सिंघ ज़ालिम हुकूमत के विरुद्ध सामने आए और साबित कर दिया कि खालसा पंथ किसी के मिटाने से मिटने वाला नहीं।

आज जब पंथ के गौरव पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं, हमारी नौजवान पीढ़ी नशे और पतितपन जैसी बीमारियों का शिकार हो रही है। हमें लगता है कि पंथ-विरोधी ताकतें हमारी पंथक शक्ति को कमज़ोर करने का यत्न कर रही हैं। ऐसे में हमें सबसे पहले आत्मविश्लेषण करना पड़ेगा, क्योंकि हमारा सामूहिक रूप ही 'पंथ' है। सिक्ख रहित मर्यादा में 'गुरु-पंथ' को परिभाषित करते हुए लिखा है-- ''तैयार-बर-तैयार सिंघों के समूह को 'गुरु-पंथ' कहते हैं।'' . . . इसीलिए हमारी सामूहिक व्यक्तिगत जीवन की दृढ़ता ने पंथक शक्ति को मज़बूत करना है और हमारी व्यक्तिगत जीवन की कमज़ोरी ने पंथक शक्ति को कमज़ोर बनाना है। अन्य कोई भी बाहरी ताकत गुरु-साजे खालसा पंथ को कमज़ोर नहीं कर सकती। गुरबाणी-उपदेश से विहीन हमारा जीवन, हमारी अमीर धार्मिक परंपराओं में श्रद्धा-विश्वास पैदा नहीं कर सकता। श्रद्धा-विश्वास के बिना हम अपनी परंपराओं को स्वयं रद्द कर पंथ, कौम को चढ़दी कला की दिशा में नहीं ले जा सकते।

हम खालसा साजना दिवस को आत्मविश्लेषण दिवस के रूप में मनाएँ कि क्या हमने सचमुच श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपना धार्मिक पिता और माता साहिब कौर जी को अपनी धार्मिक माता मान लिया है? क्या हमारा जन्म-स्थान वास्तव में केसगढ़ साहिब है और हम निवासी श्री अनंदपुर साहिब के हैं? क्या हम एक पिता की संतान होने के कारण सभी अमृतधारियों के धार्मिक भ्राता हैं? यदिं अंतरात्मा से जवाब 'हाँ' में आए तो एक नया सवाल और खड़ा हो जाता है कि यदि हम एक पिता की संतान हैं, एक ही खंडे-बाटे से के अमृतधारी है, एक ही प्रकार की पाँच ककारी रहित (आचरण) के धारक हैं, एक अकाल के पुजारी हैं, एक ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को मानने वाले हैं, तो फिर हमारे में आपसी झगड़े, वैर-विरोध, नफ़रत, जात-पाँत के भेदभाव क्यों? पंथक एकता की, आपसी इत्तफ़ाक की बात कहाँ है? फिर हमें और आत्मविश्लेषण करना पड़ेगा कि क्या हम अमृत छक कर, अमृत का प्रण, अगला रूहानी सफ़र-- अमृत बेला संभालना, नित्तनेम, सेवा, सिमरन, गुरबाणी का अभ्यास आदि शुरू किया है कि नहीं? यह हमारी रूहानी पूँजी है जिससे हमारा न्यारा आचरण, व्यवहार, किरदार बनना है। पाँच ककारी रहित इस रूहानी पूँजी की बाड़ है। हमने अपने अंदर भी झांकना है कि रूहानी पूँजी, नाम की खेती कहीं सूख तो नहीं रही! रूहानी जीवन के बिना गुरसिक्ख के जीवन में अवरोध ही अवरोध है। इस अवरोध में रह कर हम पंथ की जीत और धर्म का जैकार के ध्वजवाहक नहीं बन सकते। पंथ की चढ़दी कला के लिए हमें गुरु-दर्शाए, बाणी-सिमरन वाले रूहानी मार्ग के पथिक बनना ही पड़ेगा।

पंथक मज़बूती के लिए भाई वीर सिंघ ने सुंदर नुक्ता बताया है। भाई साहिब के अनुसार-- खालसा पंथ एक महल है और हम सब इस महल की ईंटें हैं। यदि ईंटें कच्ची हों तो कभी भी मज़बूत महल का निर्माण नहीं हो सकता। सामूहिक रूप से सेवा, सिमरन, बाणी के बिना हमारे अधूरे जीवन मज़बूत खालसा पंथ का निर्माण नहीं कर सकते।'' आज यदि हमारे बच्चों में या हमारी संस्थायों में कहीं अपक्वता है तो उसके ज़िम्मेदार हम ख़ुद हैं, क्योंकि घर को सेंध तब लगती है जब घर की दीवारें कमज़ोर हों।

आज धर्म-प्रचार की ज़िम्मेदार जत्थेबंदियों, अध्यापकों और माता-पिता को दोहरा फ़र्ज़ अदा करने की ज़रूरत है। गुरमति के अनुसार जीवन जीते हुए जहाँ हमने सिक्खी महल की मज़बूत ईंटें बनना है, वहीं भविष्य में सिक्ख-पंथ के महल की बुनियाद मज़बूत करने के लिए नयी ईंटें पका कर उन्हें भी मज़बूत बनाना है। अपने बच्चों तथा नौजवान पीढ़ी को गुरबाणी और गुरु-इतिहास के लड़ लगा कर उनके ऊँचे इख़लाक वाले किरदार बनाने हैं, उन्हें गुरमति सिद्धांतों के पहरेदार बनाना है। यदि हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी आने वाली संतान को गुरबाणी के संग जोड़ते जायेंगे तो सदा ही 'पंथ की जीत' और 'धर्म का जैकार' होता रहेगा।

फार्म-४, नियम-८

१. प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२. प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की सात तारीख
३. मुद्रक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४. प्रकाशक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५. संपादक का नाम	:	स. सतविंदर सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	संपादक, गुरमत ज्ञान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६. मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सतविंदर सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख-०७/०४/२०२३

हस्ताक्षर/-

(सतविंदर सिंघ)

प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज

*-डॉ. मनजीत कौर**

खालसा-पंथ की साजना ईश्वर की मौज और समय की माँग थी। जिस कौम को 'खालसा' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है-- 'खालिस' अर्थात् 'शुद्ध', जिसमें किसी प्रकार की कोई मिलावट न हो और ऐसी स्त्री या पुरुष, जिसकी करनी और कथनी एक हो।

मध्यकालीन भारत में राजनीतिक अराजकता के फलस्वरूप समाज में भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता चरम सीमा पर थी। मुगलों के शासन-काल में शासकों के जुल्म की इंतहा के चलते भारतीय जनता अपने ही देश में गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी और सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मानसिक रूप से गुलामी का विष-पान कर रही थी। भारतवासी गुलामी की जंजीरों की जकड़न में आकर इससे छूटने तोड़ने की बजाय खुद इस कद्र टूट चुके थे कि इसे ही अपना भाग्य समझ बैठे थे। एक तरफ मुस्लिम शासकों के अत्याचार, दूसरी तरफ अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, पाखण्ड, कर्मकांड और समाज में फैली अनेक कुरीतियां व्याप्त थीं।

ऐसी विकट परिस्थितियों में श्री गुरु नानक देव जी ने एक अद्वितीय, सार्वभौमिक मानवतावादी चिन्तन पेश किया, जो समस्त भेदभावों से दूर मानव-मात्र को प्रेम और सद्भावना का पाठ पढ़ा रहा था। समस्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, पाखण्डों के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की नींव रखी। श्री गुरु नानक देव जी ने भावनात्मक समर्थन से नीच एवं अछूत समझे जाने वाले लोगों को गले लगाकर डंके की चोट पर कहा :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।।
नानकु तिन कै संगि साथि
वडिआ सिउ किआ रीस।।
जिथै नीच समालीअनि
तिथै नदरि तेरी बखसीस।। *(पन्ना १५)*

खालसा पंथ की साजना ईश्वर की मौज और समय की माँग थी। इसके लिए समूची कौम को योद्धा बनाना पहली शर्त थी। इस तथ्य को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सर्वप्रथम आत्मसात किया। मुगलों के शासन-काल में गैर-मुसलिमों को सिर पर पगड़ी बाँधने, शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने व केश रखने की अनुमति तक नहीं थी। कोई फख्र से सिर उठा कर चलने की जुर्रत नहीं कर सकता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

ने उन्हें केश रखने, पगड़ी बांधने, शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने एवं स्वाभिमान से जीने को प्रोत्साहित किया। उस समय आम लोगों में हीन भावना इस कद्र बढ़ गई थी कि लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऐसे काम कर रहे थे, जिन्हें हीन कर्म माना जाता था और हेय दृष्टि से देखा जाता था। जो लोग कभी ख्वाब में भी नहीं सोच सकते थे कि हम भी शस्त्रधारी हो सकते हैं, मुगलों का सामना करना तो दूर की बात, उन्हें शस्त्रबद्ध होने के स्वाभिमान से लबालब भर दिया। उनका जीवन उस समय कुछ ऐसा था :

जात हमारी तोलन तकड़ी।
नंगी करद न कबहूं पकड़ी।
जिड़ी उड़े डर सिओं मर जाओं।
इन मुगलन से कौसे लड़ पाओं।

विकट परिस्थितियों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रबल इच्छा-शक्ति के फलस्वरूप भावना यह थी :

गिदड़ों से मैं शेर बनाऊं।
चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं।
सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समत्व समाज की संकल्पना की तथा खालसा पंथ की साजना की, जिससे भारतीय इतिहास में एक नवीन मोड़ आया। यह समय था १७५६ बिक्रमी की वैसाखी वाले दिन का। एक विशाल सभा का आयोजन, विराट जनसमुदाय के समक्ष प्रेरणादायक उद्‌बोधन, हाथ में नंगी कृपाण और क्रमानुसार पाँच सिरों की माँग। यह उस स्वरूप की सम्पूर्णता थी जिसे श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में पहले ही उजागर कर दिया था :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै।।
सिरु दीजै काणि न कीजै।।(पन्ना १४१२)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्‌घोष था-- पाँच सिरों की माँग। परिणाम स्वरूप सभा में पूर्णतया सन्नाटा छा गया। दशमेश पिता का यह रूप पहले संगत ने कभी नहीं देखा था। फिर सिंघनाद हुआ-- ''है कोई सिक्ख बेटा, जो करे शीश भेटा?'' इस पर बारी-बारी से पांच सिक्ख खड़े हुए। गुरु जी उन्हें तम्बू में ले गए। उस दिन संगत ने गुरु साहिब के हाथ में खून से लथपथ कृपाण भी देखी। कुछ समय उपरान्त उपस्थित जनसमूह ने पाँच सिक्खों को नए रूप, वेश, स्फूर्ति तथा नए रंग-ढंग के साथ पांच प्यारों के रूप में सुसज्जित देखा।

विविध धर्मों, प्रांतों, कर्मों व भाषायी विभिन्नता के लोगों को एक साथ एक ही बाटे अर्थात् बर्तन से अमृत-पान करवा कर सदियों से भारत को दीमक की तरह खा रही जात-पाँत की भावना व ऊँच-नीच की दीवार को धराशायी कर दिया। सबके जीवन में एक अद्‌भुत मिठास घोल दी। नाम के साथ 'सिंघ' व 'कौर' शब्द जोड़ना अनिवार्य कर दिया। 'सिंघ' अर्थात् 'शेर' और 'कौर' अर्थात् 'राजकुमारी'। अपने जैसी सूरत एवं सीरत अपने खालसे को प्रदान की। इस प्रकार

खालसा पंथ की साजना हुई।

यही नहीं, पाँच प्यारों से फिर स्वयं अमृत की याचना की। पांच प्यारों को 'गुरु खालसा जी' कह कर सम्बोधित किया। मान-सत्कार दिया। कहा कि मुझे भी 'गोबिंद राय' से 'गोबिंद सिंघ' बनाने की समर्थता गुरु खालसा जी! आप में ही है। इस प्रकार गुरु जी स्वयं पाँच प्यारों से अमृत-पान कर 'गोबिंद राय' से 'गोबिंद सिंघ' बने। इतिहास गवाह है कि शिष्य बेशक कितना भी योग्य क्यों न हो जाए, शिष्य, शिष्य ही रहा और गुरु, गुरु ही, लेकिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सिक्खों को 'गुरु खालसा' कहकर यह भेद मिटा दिया। इसी भाव को लक्षित करते हुए भाई गुरदास जी ने कितने सार्थक शब्द कहे हैं :

वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला।।

(वार ४१:१७)

गुरु-शिष्य भेद को मिटा कर आपने अपने खालसा को पंच मुक्ति का आदेश दिया। चिन्तकों के चिन्तानुसार पंच मुक्ति का सिद्धांत इस प्रकार है :--

१ धर्म-नाश -- पुराने सभी धार्मिक विश्वासों से मुक्ति।

२. कर्म-नाश -- पूर्वकालीन दुष्कृत्यों से मुक्ति।

३. कुल-नाश -- किसी भी कुल के आधार पर ऊंचे या नीचे जाति-भाव के मुक्ति।

४. भ्रम-नाश -- समस्त वहमों-भ्रमों एवं कर्मकांडों से मुक्ति।

५. कृत-नाश -- हीन समझे जाने वाले कार्यों को न करने की भावना से मुक्ति।

समूची मानवता में ईश्वर का दीदार करने वाले गुरु जी मानव-प्रेम को ही सच्ची भक्ति और उपासना मानते हैं :

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो।।

(अकाल उसतति)

यह अमृत की शक्ति थी, जिसकी बदौलत देश-हित जद्दोजहद में बेमिसाल शहादतें दी गईं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना तन-मन-धन, सरवंश, सर्वस्व देश-धर्म हेतु कुर्बान कर दिया। विश्व इतिहास में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा कोई दानी नहीं, जिन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर सिक्खी का बड़ा महल खड़ा किया। अपने खालसा को मान-सम्मान, ऊँचा रुतबा प्रदान किया। अपने खालसा को प्रेरित किया कि जब तक खालसा खालिस रूप में है, तब तक मेरा तेज उसके साथ है, लेकिन जब यह नियमों की अर्थात् मर्यादा की उल्लंघना करेगा तो मेरी कृपा का पात्र नहीं रहेगा। गुरु साहिब के वचन थे :

ख़ालसा मेरो रूप है ख़ास।
ख़ालसे महि हौ करौ निवास।।
ख़ालसा मेरो मुख है अंगा।
ख़ालसे के हौं सद सद संगा।।...
ख़ालसा काल पुरख की फ़ौज।
प्रगटिओ ख़ालसा प्रमातम की मौज।।...
जब इह गहै बिपरन की रीत।

मैं न करों इन की प्रतीत।। *(सरबलोह ग्रंथ)*

ज्योति-जोत समाने से पूर्व आने वाले समय की नजाकत को समझते हुए अपने प्यारे खालसा को शबद-गुरु-- श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सपुर्द किया और आदेश किया :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरु मानिओ ग्रंथ।।
गुरू ग्रंथ जी मानीओ प्रगट गुरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहै खोज सबद मै लेह।।

(पंथ प्रकाश)

खालसा-साजना के क्रांतिकारी, अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम निकले। सिक्खों के आचरण और विचारधारा में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। अब तक निम्न, अधर्म, शोषित और शूद्र समझे जाने वाले दीन-हीन लोग खालसा सज कर, शूरवीर योद्धा बन कर सवा-सवा लाख मुगल सेना पर भारी पड़ने लगे। कर्मकाण्डों, वहमों-भ्रमों को पूर्णतया त्याग कर खालसा उच्च आचरण का धारक बन गया। खालसा देश-धर्म हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु आठों पहर तत्पर रहता, जिसकी बदौलत वह धर्म-रक्षक बना, स्वाभिमान से जीवन जीते हुए आजादी का परवाना बना। यह हकीकत है कि अगर खालसा-साजना न हुई होती तो आज भी भारत गुलामी की बेड़ियों में ही जकड़ा होता।

विश्व इतिहास में शिष्य को इतना सम्मान और गौरव मिला कि गुरु-शिष्य का भेद ही मिट गया। साथ ही 'सिक्ख-पंथ' से 'खालसा पंथ' तक के सफर में पूर्ण रूप से लोकतांत्रिक और पंचायती सिद्धांतों को लागू करने के दूरगामी परिणाम निकले। निम्न समझे जाने वाले लोगों की मानसिक विचारधारा पर जादूई प्रभाव पड़ा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बड़े फख्र से कहा कि मेरा तन-मन-धन सब कुछ खालसा का है। गुरु जी के स्वर्णिम मनोहर वचन जात-पाँत, ऊंच-नीच की सदियों से जमी मैल को धोकर खालसा को सदा के लिए निर्मल कर गए :

सेव करी इनही की भावत
अउर की सेव सुहात न जीको।।
दान दयो इनही को भलो
अरु आन को दान न लागत नीको।।
आगै फलै इनही को दयो
जग मै जसु अउर दयो सभ फीको।।
मो ग्रिह मै तन ते मन ते
सिर लउ धन है सब ही इनही को।।

(श्री दसम ग्रंथ)

गुरु-पिता दशमेश जी से मिले इतने मान-सम्मान की बदौलत आज भी खालसा समूची मानवता की खुशहाली, हरियाली, शांति, सकून सबके विकास-विगास हेतु अपने अन्तः करण से सरबत्त के भले की अरदास करता है।

अन्त में बस, इतना ही कहूंगी :
सच में यह देश, देश न होता,
अगर खालसा पंथ का सृजनहार,
सरवंशदानी पिता कलगीधर दशमेश न होता।

ज्ञानी गिआन सिंघ से सम्बन्धित हुआ खोज-कार्य

*— डॉ. धरम सिंघ**

सिक्ख इतिहासकारी में ज्ञानी गिआन सिंघ का नाम बड़े आदर सहित लिया जाता है। भाई रतन सिंघ (भंगू) (कृत प्राचीन पंथ प्रकाश) और महाकवि भाई संतोख सिंघ (कृत श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ) के बाद तीसरे नंबर पर ज्ञानी गिआन सिंघ का नाम लिया जा सकता है। बेशक ज्ञानी जी की इतिहासकारी का प्रेरणा-स्रोत 'प्राचीन पंथ प्रकाश' है, जिसका वर्णन उन्होंने स्वकथनों में भी किया है, फिर भी ज्ञानी ज्ञान सिंघ कृत 'पंथ प्रकाश' 'प्राचीन पंथ प्रकाश' से अधिक विस्तृत है और विशाल भी। 'प्राचीन पंथ प्रकाश' अठारहवीं सदी के इतिहास के बारे में ही ज्यादा रौशनी डालता है, परन्तु ज्ञानी गिआन सिंघ का इतिहास इससे आगे चल कर उन्नीसवीं सदी पूरी की पूरी और बीसवीं सदी का कुछ हिस्सा भी अपने में समाए हुए है। महाराजा रणजीत सिंघ का शासन-काल और सिक्ख रियासतों का वृत्तांत भी 'पंथ प्रकाश' में दर्ज है।

पंजाब में छापाखाना लगने के बाद ज्ञानी जी की दो रचनाएं-- 'पंथ प्रकाश' और 'तवारीख गुरू खालसा' एक से अधिक बार छपी और पढ़ी गईं। सस्ते मूल्य पर उपलब्ध, भाषा विभाग द्वारा १९७० ई. में प्रकाशित संस्करण के साथ 'पंथ प्रकाश' की पहुँच अधिकतर लोगों तक हो गई। पश्चिमी विद्या के प्रभावाधीन जब इतिहासकारी का नया मॉडल सामने आया तो इतिहासकारों का ध्यान इस मूल्यवान ग्रंथ की तरफ गया। ज्ञानी गिआन सिंघ इतिहासकार होने के अलावा पंजाबी और ब्रज भाषा के लेखक भी थे, इसलिए पंजाबी विद्वानों, साहित्यकारों और इतिहासकारों की नज़र में भी वे प्रवान चढ़े। इनके बारे में सबसे पहली पुस्तक दिसंबर १९६० ई. में पंजाबी साहित्य समीक्षा बोर्ड की तरफ से छप कर सामने आई। अब तक ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में जो खोजात्मक और आलोचनात्मक कार्य हुआ है, वह इस प्रकार है :--

१. ज्ञानी गिआन सिंघ : अध्ययन (दिसंबर १९६०)

२. श्री गुर पंथ प्रकाश, (संपा.) सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ (१९७७)

३. ज्ञानी गिआन सिंघ, डॉ. भगत सिंघ (१९७८)

४. सिंघ सभा पत्रिका का ज्ञानी गिआन सिंघ विशेषांक, जून १९७९ और जुलाई १९७९ ई. (दो भाग)

५. पंजाबी साहित्य के इतिहास और लेखक कोश आदि।

*११०, रोज़ एवेन्यू, रामतीर्थ रोड, श्री अमृतसर— १४३१०५, फोन : ९८८८९-३९८०८

ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में पंजाबी साहित्य समीक्षा बोर्ड द्वारा दिसंबर १९६० ई. में प्रकाशित पुस्तक किसी सेमिनार में पढ़े गए पर्चों का संग्रह है। सबसे पहला यत्न होने के कारण इस पुस्तक की प्रशंसा करनी बनती है, क्योंकि यह आने वाले खोज-कार्य का आधार बनी। इस पुस्तक में ज्ञानी जी के बारे में निम्नलिखित खोज-पत्र शामिल हैं:--

१. शरधा दे फुल्ल, विद्यालंकार और ज्ञानी लाल सिंघ
२. प्रस्तावना, किरपाल सिंघ कसेल
३. ज्ञानी गिआन सिंघ ते संप्रदावां, जगजीत सिंघ
४. वंश-प्रणाली, इंदर सिंघ चक्रवर्ती
५. ज्ञानी गिआन सिंघ : जीवन, प्रो. किरपाल सिंघ
६. इतिहासकार ज्ञानी गिआन सिंघ, निर्मल अखाड़ा
७. ज्ञानी जी दीआं लिखती यादगारां, भाई रणधीर सिंघ
८. ज्ञानी जी रचित पंथ प्रकाश, अवतार सिंघ आज़ाद
९. ज्ञानी जी ते शहीद भंगू, स. स. अमोल
१०. ज्ञानी जी दीआं हिंदी रचनावां, शमशेर सिंघ अशोक
११. ज्ञानी जी दे पुरखे, प्रो. प्रीतम राही
१२. ज्ञानी जी दी वारतक, प्रो. परमिंदर सिंघ
१३. ज्ञानी जी : मेरी नज़र विच, ईशर सिंघ अटारी

स्पष्ट है कि इन लेखकों में ज्ञानी गिआन सिंघ की सिक्ख इतिहासकारी और एक लेखक के रूप में उनके साहित्यक योगदान की चर्चा है। इतिहासकारी और उसके प्रभाव के बारे में ज्ञानी लाल सिंघ ने लिखा है-- ''ज्ञानी जी का अथक संघर्ष पूर्ण रूप से सफल हुआ और इनसे प्रेरणा लेकर सरदार करम सिंघ (हिस्टोरियन), बावा प्रेम सिंघ होती, डॉक्टर गंडा सिंघ आदि सज्जन पंजाब के इतिहास की सेवा में जुट गए। आज पंजाब प्रांत के इतिहास का चेहरा निखरता जा रहा है। प्रिं. सीता राम कोहली और डॉ. हरी राम गुप्ता ने इतिहास को वैज्ञानिक रूप से पेश करने का प्रशंसाजनक प्रयास किया है।'' (पृष्ठ ६, शरधा दे फुल्ल) साहित्यकारी के बारे में किरपाल सिंघ कसेल ने लिखा है-- ''ज्ञानी गिआन सिंघ पंजाब के महान साहित्यकार और इतिहासकार हुए हैं। अपनी सारी ज़िंदगी उन्होंने देश-सेवा और साहित्य-रचना में ख़र्च की है। उनकी महान रचना 'पंथ प्रकाश' और 'तवारीख गुरू खालसा' ने अनगिनत लोगों को प्रेरणा व ज्ञान दिया है। वे ब्रज भाषा के महान कवि और पंजाबी के सिरमौर गद्यकार थे तथा उनका साहित्यक संघर्ष एक बड़े परिवार में सिंधु की धारा के समान प्रवाहित रहा है। (पृष्ठ ७)

'ज्ञानी गिआन सिंघ : अध्ययन' संग्रह में सबसे लम्बा लेख (५६ पृष्ठ) स. इंदर सिंघ चक्रवर्ती का है, जो उन्होंने ज्ञानी जी के पुत्र ज्ञानी हमीर सिंघ से सामग्री प्राप्त करके लिखा। यही आलेख भविष्य में आने वाले शोधकर्ताओं के शोध का आधार बना। भाई रणधीर सिंघ का आलेख भी दूसरा बड़ा आलेख है। इसमें पहली बार ज्ञानी जी की रचनायों की मुकम्मल सूची दी गई है और साथ ही उनका संक्षिप्त परिचय भी।

ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में गंभीरता के साथ खोज करने और उनकी महान रचना 'पंथ

प्रकाश' को विधिवत् व विद्वतापूर्ण ढंग से संपादित करने का सबसे पहले विचार सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ को आया। उन्होंने ज्ञानी जी का जीवन-वृत्तांत लिखने के लिए सबसे पहला काम तथ्य एकत्रीकरण का किया। ज्ञानी गिआन सिंघ की वंशावली, भारत भर में उनका भ्रमण और उनकी रचनाओं का विवरण एक जगह इकट्ठा किया और वर्ष १९६६ में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा प्रकाशित 'गुरमति प्रकाश' के विभिन्न अंकों में छः आलेख प्रकाशित हुए। यही आलेख या सामग्री बाद में 'पंथ प्रकाश' की प्रस्तावना लिखने के काम आई।

'पंथ प्रकाश' क्योंकि पंजाबी मिश्रित ब्रज भाषा में है, इसलिए इसे सरल तरीके से अर्थों सहित समझने के लिए, सबसे पहली कोशिश ज्ञानी किरपाल सिंघ ने की, जिसकी प्रशंसा उनके समकालीन लोगों ने भी की। डॉ. पिआर सिंघ इसकी भूमिका में लिखते हैं-- ''सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ ने बहुत मेहनत से टिप्पणियों और पर्याय सहित विभिन्न स्थान पर कई कठिन शब्दों के अर्थ एवं उलझनों को सुलझाने वाली टिप्पणियाँ दी हैं और इसका पाठ ज्ञानी गिआन सिंघ की अन्य रचनायों के साथ मेल कर तैयार किया है। इस प्रकार यह संस्करण बड़ा प्रमाणिक और लाभदायक बन गया है। अपने इस सँवारे रूप में यह पुस्तक भाई वीर सिंघ द्वारा संपादित 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के मुकाबले की चीज़ बन गई है।'' इसी प्रकार इस ग्रंथ की भूमिका में स. शमशेर सिंघ अशोक ने लिखा है-- ''सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ ने बड़े यत्न से प्राचीन प्रतियों का मिलान कर पहले इस महान ग्रंथ की इस कमी को महसूस किया और फिर एक अद्वितीय साहस के साथ यत्न कर इसका संपादन बड़े सुयोग्य ढंग के साथ किया है। पुस्तक की प्रस्तावना में ज्ञानी गिआन सिंघ ने सभी साहित्यक पक्षों पर बहुत दिलचस्प और स्वस्थ जानकारी दी है।'' (पृष्ठ ६)

किसी भी संपादित ग्रंथ की भूमिका ही वास्तव में उस ग्रंथ और ग्रंथकार पर हुई खोज का सार होती है। संपादक ज्ञानी किरपाल सिंघ ने पाँच जिल्दों में से एक पूरी की पूरी जिल्द, तकरीबन ढाई सौ पृष्ठ, इस ग्रंथ की प्रस्तावना को समर्पित की है। प्रस्तावना में उन्होंने अपने संपादकीय प्रयास से सम्बन्धित विस्तार में लिखा है कि इस ग्रंथ के संपादन में उन्होंने क्या-क्या मुख्य रखा है। उनका कथन है-- ''प्रस्तावना लिखने के लिए 'पंथ प्रकाश' की संपादना का संकल्प, हमारे द्वारा किए गए विस्तार आदि विषयों पर खोज इकट्ठा की गई है। प्रस्तावना में इतिहास, सिक्ख धर्म में इतिहास, इतिहास के प्रकार, 'पंथ प्रकाश' किस प्रकार का इतिहास है, इसके स्रोत, ग्रंथ-रचना में ईमानदारी आदि आलेख शामिल हैं। ज्ञानी जी के जीवन में वंश-परंपरा, जन्म-नगर, जन्म, बचपन, नौकरी, साधु बनना और भारत भर की यात्राओं का विवरण दर्ज है। पुस्तकों की रचना

और उनके बारे में अब तक की जानकारी एकत्र की गई है। ज्ञानी जी की काव्य-कला के शीर्षक के अंतर्गत बोली, छंद, अलंकार, रस, विशेष चमत्कार, आम वाकफियत आदि पक्ष से काव्य नमूने देकर काव्य कला के पक्ष को उजागर किया है।'' (पृष्ठ ९)

वैसे तो इस स्वकथन से ही स्पष्ट है कि ज्ञानी जी ने इस ग्रंथ और ग्रंथकार के बारे में किस प्रकार की खोज की है, मगर पाठकों की रुचि के लिए यह बताना बनता है कि ज्ञानी किरपाल सिंघ के इस ग्रंथ को सबसे पहले छः जिल्दों में प्रकाशित किया गया था, जिसमें एक जिल्द प्रस्तावना या भूमिका की थी और दूसरी पाँच जिल्दों में 'पंथ प्रकाश' का मूल पाठ था। बाद में प्रस्तावना और पहली जिल्द को एक ही सैंची में इकट्ठा कर दिया और बाकी सभी भाग वैसे ही रहे। अब यह मुकम्मल ग्रंथ पाँच भागों में है। प्रस्तावना में जिन उपभागों के बारे में चर्चा है, वे निम्नलिखित के अनुसार हैं :-

१. इतिहास : सिक्ख धर्म में इतिहास, इतिहास के रूप (सारांशक इतिहास, सविस्तारक इतिहास, वैज्ञानिक इतिहास, कोमल उनरी (कलात्मक) इतिहास, 'पंथ प्रकाश' के स्रोत, ग्रंथ-रचना में ईमानदारी) आदि।

२. कवि जी का जीवन : वंश-परंपरा, जन्म-नगर, बचपन और प्राथमिक शिक्षा लाहौर दरबार में, पटियाला फ़ौज में नौकरी, ज्ञानी जी पटियाले ग्रंथी, साधु बनना, ज्ञानी जी के शिक्षा-दाते।

३. यात्रा : श्री दमदमा साहिब, श्री अनंदपुर साहिब, श्री हजूर साहिब, श्री पटना साहिब, कलकत्ता, बर्धमान, जगन्नाथपुरी, आगरा, दिल्ली, बहावलपुर, सिंध, काठियावाढ़, जूनागढ़, गिरनार पर्वत आदि।

४. ज्ञानी जी की रचनायें : पंथ प्रकाश, तवारीख गुरू खालसा, निर्मल पंथ प्रदीपका, इतिहास रियासत बागड़ियां, श्री भुपिंदरा नंद, श्री रिपुदमन प्रकाश, तवारीख श्री अमृतसर, गुरुधाम संग्रह आदि।

५. ज्ञानी जी-- विद्वानों की नज़र में

६. ज्ञानी जी की काव्य-कला, भाषा, छंद, अलंकार, रस आदि।

'पंथ प्रकाश' एक बहुआकारी रचना है और इसकी सम्पादना के समय ऐसे ही ग्रंथ का मॉडल आवश्यक था। ज्ञानी किरपाल सिंघ ने इस मॉडल के लिए भाई वीर सिंघ द्वारा संपादित और १९२६ ई. में प्रकाशित महाकवि भाई संतोख सिंघ का ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' चुना। ज्ञानी जी ने उसी प्रकार एक पूरी जिल्द प्रस्तावना की लिखी, जिसमें इस ग्रंथ के कर्त्ता ज्ञानी गिआन सिंघ के जीवन के बारे में विचार किया गया है। अर्थ भी उसी तरह से चिन्हित कर फुट नोटों में टिप्पणियाँ की हैं और ग्रंथ से सम्बन्धित कई उलझनों का निपटारा किया है। इस प्रकार इस ग्रंथ को समझने में आसानी पैदा हो गई है। ज्ञानी किरपाल सिंघ की संपादन-कला पर भाई वीर

सिंघ का प्रभाव प्रत्यक्ष है।

डॉ. भगत सिंघ की पुस्तक 'ज्ञानी गिआन सिंघ' इस विषय पर लिखी गई एक अन्य पुस्तक है। ज्ञानी जी बुनियादी तौर पर इतिहासकार थे, लेकिन साथ ही वे लेखक भी थे। 'पंथ प्रकाश' उनका काव्य में लिखित इसका उत्तम नमूना है, जबकि 'तवारीख गुरू खालसा' तथा अन्य पुस्तकों में वे एक कुशल गद्यकार नज़र आते हैं। एक इतिहासकार के रूप में ज्ञानी जी की पुस्तकों का महत्व स्वीकार करते हुए डॉ. भगत सिंघ ने लिखा है-- ''ज्ञानी जी की पुस्तकें निश्चय ही सिक्ख इतिहास को एक अमूल्य देन हैं। सिक्ख इतिहास के आधुनिक शोधकर्ता ज्ञानी जी की रचनाओं से भारी मात्रा में प्राथमिक सामग्री प्राप्त करते हैं और उससे अपनी रचनाओं का आधार विकसित करते हैं।''

सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित ज्ञानी गिआन सिंघ की रचनाएं इस कारण भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि लेखक ख़ुद शहीद भाई मनी सिंघ जी की पाँचवीं पीढ़ी में से थे, जिस कारण इतिहास की कई मौखिक रिवायतों की जानकारी उन्हें विरासत में से ही मिल गई थी। दूसरा, उन्होंने पंद्रह-सोलह वर्ष भारत का भ्रमण कर बड़ी मात्रा में सामग्री इकट्ठी की, जिसका प्रयोग इन पुस्तकों में हुआ है। डॉ. भगत सिंघ ने अपनी चर्चाधीन पुस्तक में ज्ञानी जी से सम्बन्धित हर पक्ष पर चर्चा की है, फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए इस पुस्तक की विषय-सूची दृष्टिपात करना लाभदायक रहेगा: --

१. ज्ञानी गिआन सिंघ दी कुल अते मुड्ढला जीवन

२. ज्ञानी जी दे सैर-सपाटे अते अंतिम दिहाड़े

३. ज्ञानी जी दीआं रचनावां

४. ज्ञानी गिआन सिंघ अते सिक्ख संप्रदावां

५. ज्ञानी जी : इक इतिहासकार

६. ज्ञानी जी : इक वारतक लिखारी

७. ज्ञानी जी : इक कवि

८. ज्ञानी जी दी शख्सियत।

सिक्ख समाज के धार्मिक समारोह के अवसर पर अरदास की समाप्ति के उपरांत जो ''आगिआ भई अकाल की'' वाले दोहरे पढ़े जाते हैं, वे ज्ञानी गिआन सिंघ रचित 'पंथ प्रकाश' में से ही हैं। ज्ञानी किरपाल सिंघ ने अपने संपादित संस्करण में इन दोहरों से पहले 'श्री मुक्ख वाक पातशाही १०' का शीर्षक दिया है, जिससे भ्रम उत्पन्न हो सकता है, परन्तु ये पंक्तियां ज्ञानी गिआन सिंघ ने दसम पातशाह के मुखारबिंद से कहलवाई हैं। लिखी ये उन्हीं के द्वारा हैं। पूरे प्रसंग को निरंतरता में पढ़ने से शक की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती।

पुस्तक के पहले, दूसरे और अंतिम अध्याय में ज्ञानी गिआन सिंघ के जीवन, यात्राओं, इतिहासकारी की तरफ प्रेरित होने और उनके गुणों का विवरण है, जबकि तीसरे अध्याय में उनकी दो दर्जन से अधिक पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय है। यह एक विडंबना है कि जहाँ उनकी

कुछ पुस्तकें, विशेषतया सिक्ख इतिहास से सम्बन्धित, बहुत प्रसिद्ध हुई हैं, वहीं उनकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित न हो सकीं और कुछ पुस्तकों की पुनर्प्रकाशना नहीं हो सकी। इसीलिए कई पुस्तकों के नाम तो मिलते हैं, परन्तु वे अनुपलब्ध हैं। ज्ञानी गिआन सिंघ स्वयं निर्मल संप्रदाय से संबंधित थे। अध्याय चतुर्थ में निरमल संतों द्वारा सिक्खी के प्रचार के लिए स्थापित किए गए अखाड़ों के साथ-साथ उनके द्वारा किए गए अन्य प्रयत्नों का वर्णन है। सांप्रदायिक पहुँच ने ज्ञानी जी की इतिहासकारी पर भी काफ़ी प्रभाव डाला है। कूका वर्ग के बारे में लिखे गए अट्ठाईस कबित्तों को नामधारी सम्प्रदाय बहुत प्रमाणिक और सही मानता है।

डॉ. भगत सिंघ, क्योंकि खुद इतिहासकार थे, इसलिए ज्ञानी गिआन सिंघ के इतिहासकार के संकल्प, इतिहास लिखने के लिए किये गए प्रयत्न, सामग्री के संकलन के लिए किए गए प्रयास, इतिहासकारी के गुणों-लक्षणों के साथ-साथ इसकी त्रुटियों की भी निशानदेही की है। एक लेखक के तौर पर ज्ञानी जी की कला-कौशलता परखने के लिए उनमें काफ़ी सामर्थ्य था, परन्तु डॉ. भगत सिंघ ने इस तरफ़ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। बेशक अध्याय छठम में ज्ञानी जी को एक गद्यकार के तौर पर तथा अध्याय सप्तम में एक कवि के तौर पर परखने का प्रयास है, परन्तु यह चर्चा संक्षिप्त है, जिस कारण कई पक्षों के बारे में विचार नहीं हो सका। बहरहाल डॉ. भगत सिंघ विरचित यह पुस्तक ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में चाहे संक्षिप्त ही रही, लेकिन एक मुकम्मल दृश्य पेश करती हुई इस लेखक के बारे में जान-पहचान मुहैया करवा जाती है।

पंजाब में सिंघ सभायें १८७३ ई. में बनना आरंभ हुई थीं। इनकी स्थापि के सौ वर्ष पूरे होने के उपरांत पुनर्भाव के रूप में १९७३ ई. में पुनः प्रयास किया गया। इसे 'केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा' नाम दिया गया, जिसके प्रधान पूर्व स्पीकर लोक सभा और राजस्थान के पूर्व राज्यपाल स. हुकम सिंघ थे और महासचिव ज्ञानी गुरदित्त सिंघ थे।

ज्ञानी गुरदित्त सिंघ की अपनी पृष्टभूमि गुरमति के विद्वान और पत्रकारिता वाली थी, इसलिए सभा की तरफ से 'सिंघ सभा पत्रिका' नामक एक मासिक पत्रिका जारी की गयी, जिसके संपादक ज्ञानी जी ख़ुद थे। ज्ञानी गुरदित्त सिंघ की पहलकदमी से विभिन्न स्थानों पर कई सेमिनार आयोजित किए गए, जिनमें पढ़े गए खोज-पत्रों को 'सिंघ सभा पत्रिका' के विशेषांकों में प्रकाशित किया जाने लगा। एक सेमिनार ज्ञानी गिआन सिंघ और उनकी प्रसिद्ध रचना 'पंथ प्रकाश' पर करवाया गया, जिसमें पढ़े गए खोज-पत्रों को सिंघ सभा पत्रिका के दो अंकों (जून-जुलाई, १९७९) में प्रकाशित किया गया। जून, १९७९ ई. में प्रकाशित आलेखों का विवरण इस प्रकार है :--

१. ज्ञानी गिआन सिंघ रचित पंथ प्रकाश दी

रचना, एडीशनां दे भेद ते कारण, सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ

२. पंथ प्रकाश-- खालसयी आचरण ते खालसयी बोले, पिआरा सिंघ पद्म

३. ज्ञानी गिआन सिंघ दा पंथ प्रकाश, डॉ. किरपाल सिंघ

४. साडा पहला इतिहासकार : ज्ञानी गिआन सिंघ, शमशेर सिंघ अशोक

५. ज्ञानी गिआन सिंघ दीआं रचनावां, प्रो. प्रकाश सिंघ

जुलाई १९७२ वाले अंक में ये आलेख शामिल हैं :--

१. 'पंथ प्रकाश' विच अंकित सतिगुरां दी कामरूप यात्रा, डॉ. हरनाम सिंघ शान

२. वड्डा पंथ प्रकाश रचित ज्ञानी गिआन सिंघ, डॉ. महिंदर सिंघ (ढिल्लों)

३. ज्ञानी गिआन सिंघ जी रचित पंथ प्रकाश : तित्थावली अथवा संवतावली, गुरचरन सिंघ ज्ञानी

४. श्री गुर पंथ प्रकाश दी पंथ प्रकाश नालों विलक्खणता, डॉ. गुरबचन सिंघ नैयर

इन दोनों अंकों में ज्ञानी गिआन सिंघ के जीवन और रचनायों का परिचय कराने के साथ-साथ उनकी इतिहासकारी और साहित्यक-संघर्ष का भी मूल्यांकन किया गया है। इन विशेषांकों के आलेखों में से सिंघ साहिब ज्ञानी किरपाल सिंघ, प्रो. प्रकाश सिंघ और डॉ. हरनाम सिंघ शान के आलेख आम आलेखों की अपेक्षा ज्यादा विस्तृत हैं। ज्ञानी किरपाल सिंघ का आलेख उनके द्वारा संपादित 'पंथ प्रकाश' की भूमिका का पूरक आलेख ही समझा जाना चाहिए, जिसमें और ज्यादा चर्चा इस ग्रंथ के मूल पाठ के पाठांतरों की है।

-उपरोक्त पुस्तकों और विशेषांकों के अलावा ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में कुछ फुटकल किस्म की सूचनाएँ और इंदराज भी मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर भाषा विभाग पंजाब, पटियाला द्वारा प्रकाशित 'पंजाबी साहित दा इतिहास' (भाग दूसरा) में ज्ञानी जी के बारे में दो पृष्ठों में चर्चा है, जिसमें उनकी रचनायों के नाम देने और उनकी साहित्यक विशेषताओं का वर्णन है। इसी प्रकार पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ द्वारा प्रकाशित 'पंजाबी साहित देश' (भाग दूसरा) और भाषा विभाग वाली 'पंजाबी लेखक डायरेक्टरी' में भी ज्ञानी गिआन सिंघ के बारे में एक-एक इंदराज है। ज़रूरत है इस विषय पर आगे और खोज करने की!

अपनी पति सेती घरि जावहु

-डॉ. परमजीत कौर*

जीव अपने द्वारा किए गए कर्मों के संस्कारों के अनुसार कूकर, शूकर, हाथी, मछली, कीट-पतंगा, सर्प, वृक्ष, पत्थर, चट्टान आदि चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ बड़ी कठोर जीवन-साधना के बाद शुभ कर्मों के फलस्वरूप मानव-शरीर को प्राप्त करता है। इस प्रकार उसको एक सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति तथा परमात्मा में लीनता ही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए :

भई परापति मानुख देहुरीआ।।
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।।(पन्ना १२)

इस दुनिया में आकर मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को भूल जाता है। सारा जीवन खाने-पीने, विषयों के सुख को भोगने, परिवार के पालन-पोषण, आर्थिक उन्नति तथा झूठी मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के चक्कर एवं मोह-माया में पड़ा रहता है। मनुष्य सदा इस भ्रम में रहता है कि वह इज्जत-मान की जिन्दगी व्यतीत कर रहा है तथा उसका जीवन सफल हो गया है। श्री गुरु अरजन देव जी बाणी में हमें समझा रहे हैं कि इस प्रकार जीवन व्यतीत करने वाले का जीवन उसी तरह व्यर्थ है, जैसे मृतक देह का शृंगार करना :

मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ॥
अनिक साज सीगार बहु करता
जिउ मिरतकु ओढाइआ॥रहाउ॥
धाइ धाइ क्रिपन स्रमु कीनो
इकत्र करी है माइआ॥
दानु पुंनु नही संतन सेवा
कित ही काजि न आइआ॥ (पन्ना ७१२)

मन के अधीन हुआ मनुष्य सदा इस भ्रम में पड़ा रहता है कि यह शरीर सदा उसका अपना रहना है, इसलिए वह बार-बार शारीरिक सुख के साथ लिपटा रहता है, तथा भटकता रहता है। सारा जीवन उन्हीं कार्यों में उलझकर जिंदगी का (बहुमूल्य) समय व्यर्थ गंवा देता है जो कार्य उसको आत्मिक जीवन के मार्ग पर चलने नहीं देते :

रंग संगि बिखिआ के भोगा
इन संगि अंध न जानी॥१॥
हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी॥
(पन्ना २४२)

श्री गुरु अरजन देव जी तो यहां तक कहते हैं कि ऐसे मनुष्य मानों भार ढोने वाले गधे हैं :

खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत॥
आठ पहर महा स्रमु पाइआ
जैसे बिरख जंती जोत॥ (पन्ना ११२१)

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)—१३५००१ फोन : ९८१२३-५८१८६

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार ऐसे मनुष्य मानों राख से भरे हुए ठेले हैं :

जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥
आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥
(पन्ना १०१०)

सांसारिक सुख में लिप्त मनुष्य दुनिया तथा दुनिया में बनाए अपने घर आदि को अपना पक्का ठिकाना समझ लेता है। वह अपने बनाए घर-सम्बन्धियों के मोह व भोग-विलास के साधनों में लिप्त रहता हुआ अज्ञानता के कारण यह नहीं समझता कि इस संसार में उनका निवास केवल रैनि बसेरे जैसा है। उसका वास्तविक ठिकाना, उसका असल घर तो वह है जहाँ उसने अंत में जाना है। वहां जाने के लिए, यात्रा के खर्च के लिए प्रभु के नाम का खजाना साथ लेकर जाना है :

दुनीआ कैसि मुकामे ॥
करि सिदकु करणी खरचु बाधहु
लागि रहु नामे ॥ (पन्ना ६४)

गुरु साहिब हमें समझा रहे हैं कि हे मनुष्य! तू रत्न-जवाहर खरीदने आया था, लेकिन यहां से कलर (राख) लादकर चल पड़ा है। जो तेरा पक्का ठिकाना है, जिस घर में तूने रहना-बसना है, वह घर तुझे याद ही नहीं है। उस घर की तरफ तूने कभी ध्यान ही नहीं दिया :

— जिह घर महि तुधु रहना बसना
सो घरु चीति न आइओ ॥३ ॥
अटल अखंड प्राण सुखदाई
इक निमख नही तुझु गाइओ ॥४ ॥
जहा जाणा सो थानु विसारिओ
इक निमख नही मनु लाइओ ॥५ ॥
पुत्र कलत्र ग्रिह देखि समग्री
इस ही महि उरझाइओ ॥ (पन्ना १०१७)
— दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ
जातउ कउडी बदलहा ॥
काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ
कालर बिरख जिवहा ॥१ ॥
आइओ लाभु लाभन कै ताई
मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥
काच बादरै लालु खोई है
फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥ (पन्ना १२०३)

गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं कि तू जगत में आत्मिक जीवन का लाभ लेने के लिए आया था पर तू तो मन को मोहने वाली माया ठग-बूटी के साथ ही अपने मन को लगा बैठा है। तू काँच के बदले लाल गंवा रहा है। हे मूर्ख! यह मानव-जन्म वाला समय फिर कब मिलेगा? इस जन्म में प्रभु के नाम की कमाई करके जाएगा तो आगे परलोक में जाना आसान हो जाएगा :

— सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥
(पन्ना ८९८)
— जा कउ आए सोई बिहाझहु
हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे
बहुरि न होइगो फेरा ॥ (पन्ना १३)

इज्जत के साथ अपने असल घर जाने के लिए, गृहस्थ में रहकर अपने सारे उत्तरदायित्व को पूरा करते हुए, निर्लेप रहकर नाम की दौलत एकत्र करनी जरूरी है। मनुष्य यदि माया से निर्लेप

नहीं रहता, तो सारा समय मोह में फंसा रहता है। मोह से कामनाएं पैदा होती हैं। कामनाएं पूरी न हों तो क्रोध बढ़ता है। यदि प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाए तो मनुष्य अहंकारग्रस्त हो जाता है। अहंकार के कारण विवेकहीन हो जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा मन स्थिर नहीं रहता, हमेशा भटकता रहता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मन, पर हावी रहते हैं। वह परमात्मा से दूर होता चला जाता है। जिस मनुष्य के अंदर शोर मचाने वाले तथा भयानक भूतों जैसे कामादि वैरी बसते हों, वे उसे अपनी तरफ खींचते रहते हैं। ऐसा मनुष्य गुरु-शबद में लीन न होने के कारण बार-बार जन्म लेता है तथा मरता रहता है; अपनी प्रतिष्ठा गंवा बैठता है :

दुंदर दूत भूत भीहाले ॥
खिंचोताणि करहि बेताले ॥
सबद सुरति बिनु आवै जावै,
पति खोई आवत जाता हे ॥८ ॥
कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥
बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ *(पन्ना १०३१)*

श्वास-श्वास नाम-सिमरन करना है, ताकि जीवन रूपी फसल में से विकारों की संस्कार रूपी घास को जड़ से उखाड़ा जा सके तथा शुभ गुणों को बचाया जा सके :

— प्राणी एको नामु धिआवहु ॥
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ (पन्ना १२५४)
— जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥
हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ
हरि पुरखु निरंजना ॥ *(पन्ना ६७०)*
— हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो
नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ *(पन्ना ६८३)*
— दुलभ देह सवारि ॥
जाहि न दरगह हारि ॥
हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥
अंत की बेला लए छडाई ॥१ ॥
राम के गुन गाउ ॥
हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले
अचरज पुरखु धिआउ ॥ *(पन्ना ८९५)*

गुरु साहिब विस्तारपूर्वक समझा रहे हैं कि अपनी इन्द्रियों को बाहर भटकने से रोकने के लिए मन में प्रभु की स्तुति करो, सत्य का व्यापार करो, रसना द्वारा पवित्र नाम जपो! नेत्रों से प्रभु-स्वामी के रंग देखो! सत्संगत करते हुए पैरों से परमात्मा द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलो अर्थात् पैर गलत कार्य करने के लिए आगे न बढ़ें, बल्कि दूसरों का भला करने के लिए आगे बढ़ें! हाथों से वही कार्य किए जाएं, जिन्हें करने से किसी की हानि न हो! कानों से किसी की निंदा-चुगली सुनने या गंदे गीतों को सुनने के स्थान पर गुरबाणी का कीर्तन तथा कथा सुनी जाए, दरगाह में मुख उज्जवल होगा:

उसतति मन महि करि निरंकार ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥
निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥

मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥ (पन्ना २८१)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार प्रभु के नाम से विहीन, शास्त्रों का ज्ञाता भी झूठ का व्यापारी है। उसकी जिदंगी की गलियों के रास्ते मानों तृष्णा की आग से बाधित रहते हैं। उनमें से निकलना कठिन हो जाता है। प्रभु मानों समुद्र है। विद्या-चतुराई आदि के सहारे अनंत का अंत नहीं पाया जा सकता :

पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥
विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥
अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं ॥
सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं ॥
गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥
मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥
पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥
हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥ (पन्ना १२८८)

जिनके हृदय में नाम नहीं बसता, वे गुणों से हीन, खोटे होते हैं। जैसे खोटे सिक्के सरकारी खजाने में नहीं लिए जाते, वैसे ही खोटे जीव प्रभु-दरगाह में आदर प्राप्त नहीं करते :

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२ ॥
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥
(पन्ना २३)

नाम की बरकत से परमात्मा की हजूरी में आदर-सम्मान मिलता है। नाम से सारा कुल पार हो जाता है। प्रभु के नाम के फलस्वरूप सारे कार्य पूर्ण हो जाते हैं। नाम अंदर बस जाए तो दुनिया का कोई डर नहीं सताता, आत्मिक स्थिरता में रहना आ जाता है :

नामे दरगह मुख उजले ॥
नामे सगले कुल उधरे ॥
नामि हमारे कारज सीध ॥
नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥३ ॥
नामे ही हम निरभउ भए ॥
नामे आवन जावन रहे ॥
गुरि पूरै मेले गुणतास ॥
कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥ (पन्ना ८६३)

जिनके हृदय में नाम बस जाता है, वे अन्तरात्मा में भक्ति करते हैं, माया के झंझटों में नहीं पड़ते :

हरि के लोग नही जमु मारै ॥
ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥
राम नामु घट अंतरि पूजा
अवरु न दूजा काहा हे ॥१४ ॥
ओडु न कथनै सिफति सजाई ॥
जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥
दरगह पैधे जानि सुहेले
हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥ (पन्ना १०३३)

प्रभु का नाम अमूल्य है। यह सांसारिक कीमत से नहीं प्राप्त किया जा सकता। गुरु के सम्मुख होकर मन से गुण-कीर्तन किया जाए, यही नाम-प्राप्ति की कीमत दी जा सकती है। नाम

की प्राप्ति के लिए गुणों की पूंजी एकत्र करनी पड़ती है, गुरु की शरण लेनी पड़ती है। गुरु की मति के अनुसार चलने से ही नाम प्राप्त होता है :

गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥

(पन्ना १२४०)

गुरु द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों पर चलने से सत्य, संतोष, दया, धर्म, धीरज पांचों मित्र बन जाते हैं :

गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥
गुरमति अगनि निवारि समाई ॥
मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन
रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥ (पन्ना १०४१)

गुरु-मति के अनुसार चले बिना मन का भ्रम दूर नहीं होता :

मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥
गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥ (पन्ना ११९०)

मन के पीछे चलने वाला जीव अपनी तरफ से पूजा-पाठ, कर्म-धर्म, पवित्रता के साधन तथा अन्य उपाय भी करता है, मगर हृदय में लोभ आदि विकार होने के कारण वह जो कुछ भी करता है, कबूल नहीं होता :

करम धरम सुच संजम
करहि अंतरि लोभु विकारु ॥
नानक जि मनमुखु कमावै
सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥

(पन्ना ५५२)

मन की चंचलता, माया का मोह, मेर-तेर आदि अवगुण गुरमति पर चलने से ही समाप्त हो सकते हैं। जीव जब तक मन के पीछे लग कर कार्य करता है तब तक अहं है, हउमै है, तृष्णा का दरिया है, अशान्ति है, पतन है, परमात्मा से दूरी है। जब अपने अहं को गुरु-शबद के प्रभाव से जला देता है, मन पवित्र हो जाता है, 'मैं' का अभाव हो जाता है, अकाल पुरख पर भरोसा बन जाता है। इस अवस्था में आनन्द से प्रभु के गुण गाने से प्रभु के नाम की लगन लग जाती है तथा प्रभु-मिलाप की इच्छा में ध्यान टिक जाता है :

रसकि रसकि गुन गावह
गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥

(पन्ना १३३५)

सच्चे तथा एकाग्र मन से सिमरन में जुड़ने के लिए मन को लोकाचार तथा झूठे दिखावे वाली रस्मों के मोह से हटाना जरूरी है। तभी जीव दुनिया की प्रशंसा करना छोड़ कर प्रभु का गुण-कीर्तन कर सकता है :

भी सालाहिहु साचा सोइ ॥
जा की नदरि सदा सुखु होइ ॥ (पन्ना ५९५)

प्रभु के साथ जुड़ा हुआ मनुष्य धीरे-धीरे बाहर की दुनिया से अंदर की ओर प्रवेश करता है, अपना भीतर खोजता है, शरीर के मोह को त्यागकर शरीर के साथ जुड़ी हुई कामनाओं, सांसारिक चिन्ताओं, भटकना आदि से मन को हटाकर नाम-सिमरन में मन लगाता है, अन्तरात्मा में जुड़ता है, अपनी परख करता है, नाम-रंग में रंगा रहता है, थोड़ा बोलता है, थोड़ा खाता है, थोड़ा सोता है। जब हृदय में प्रभु के नाम की सच्चाई दृढ़ हो जाती है तो अंदर सहज पैदा हो जाता है। जिसे सच्चे नाम की प्राप्ति हो जाती है

वह दुनिया की दृष्टि में गूंगा, बावला, बहरा तथा लूला हो जाता है, क्योंकि वह खुशामदी या बुरे बोल नहीं बोलता, झूठ से परहेज करता है, किसी का मोहताज नहीं रहता, कानों से निंदा आदि नहीं सुनता, पैरों द्वारा गलत पथ पर नहीं जाता। सांसारिक रस उसे आकर्षित नहीं करते। सांसारिक प्राप्ति की मंजिलें उसे व्यर्थ लगती हैं। भक्त कबीर जी इस अवस्था का वर्णन करते हैं :

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥
(पन्ना १३७४)

ऐसे जीव का ही संसार में आना सफल माना जाता है। वही परमात्मा की हजूरी में सम्मान प्राप्त करता है :

— जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥
जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥
जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥
नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥ (पन्ना ११५६)
— प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥
नानक पति सेती घरि जावहि ॥ (पन्ना २७०)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन्सानी जीवन के लिए दो ही ऋतुयें हैं-- सिमरन तथा नाम-हीनता। इनमें से जिस ऋतु के प्रभावाधीन मनुष्य जीवन व्यतीत करता है, उसके शरीर को वैसा ही सुख या दुख मिलता है। उस प्रभाव के अनुसार ही उसका शरीर चलता रहता है। ज्ञानेन्द्रियां बाहरमुखी या अंतरमुखी होती हैं। जीव के लिए वही ऋतु सुहावनी है, सुंदर है, जब वह नाम-सिमरन करता है। नाम-सिमरन के बिना कोई भी ऋतु कल्याणकारी नहीं होती :

जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥
नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥
(पन्ना १२५४)

परमात्मा का गुण-कीर्तन करना तथा नाम-सिमरन करना ही वास्तविक तीर्थ-स्नान है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि इस तीर्थ पर स्नान करो :

सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ।।
ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ।। (पन्ना १०३०)

जो मनुष्य नाम का व्यापार करता है, गुरु की शरण में आकर अकाल पुरख के गुणों को अंदर बसाता है, विनम्रता में रहता है, किसी को दुख नहीं देता, वह अपने हृदय में अपना असल सरमाया खोज लेता है तथा अपनी जिंदगी का मनोरथ पूर्ण कर आदर सहित अपने असल घर अर्थात् परमात्मा की हजूरी में पहुंचता है :

होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥
दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥
पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥
(पन्ना ३२२)

प्रभु की कृपा हो जाए तभी यह अमूल्य दाति प्राप्त होती है :

जिन कउ होआ क्रिपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥
(पन्ना ८९)

किसानी आंदोलन (संघर्ष) बनाम सिक्ख इतिहास

*-स. किरपाल सिंघ**

किसानी आंदोलन (संघर्ष) को यदि हम इतिहास के झरोखे से नज़र मार कर देखें तो हमें किसान आदि काल से ही संघर्षशील दिखाई देता है। इतिहास अपने आप को दोहराता रहता है, परन्तु घटनाओं का समय, स्थान, हालात, नायक-खलनायक और संघर्ष के ढंग बदल जाते हैं। मूलधारा में हमें दो पक्ष ही दिखाई देते हैं-- लुटेरा पक्ष और लूटा जाने वाला पक्ष। वक्त के चलते लुटेरों द्वारा लूटमार करने के ढंग भी बदले जाते रहे हैं। संघर्ष की शुरूआत पंजाब के उन जागरूक किसानों ने की थी, जिनके पूर्वजों ने अठारहवीं सदी में एक ऐसी लंबी लड़ाई लड़ी, जिसने पूरे भारतवर्ष का इतिहास बदल कर रख दिया था। उस समय अँग्रेज़ अपनी ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल प्रांत तथा मद्रास प्रांत के समुद्री तटों एवं अंदरूनी क्षेत्रों में एक राजनीतिक दल के तौर पर स्थापित कर आगे बढ़ रहे थे। महाराष्ट्र और उसके आस-पास के इलाकों पर मराठा ताकत को होलकर अपने ख़ानदानी राजभाग के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था, जिसे सन् १७६१ में अफगान लुटेरे अब्दाली ने पानीपत की तीसरी लड़ाई में बुरी तरह से पराजित कर दिया था, और वह पुन: कभी उठ नहीं सका। राजपूताने के विशाल क्षेत्र पर राजपूत शक्ति को जयचंद के वारिसों ने मुग़ल दरबार की शान बनाया हुआ था। भारत के उत्तरी और पश्चिमी हिस्से (यमुना और सिंध नदी के दरमियान) पर मुग़ल हुकूमत की मज़बूत पकड़ थी, मगर वह अफगान लुटेरों की सीधी मार तले था। हिमाचल के पहाड़ी राजा और पटियाला की फूलकिया रियासत दिल्ली की मुग़लिया सरकार की ग़ुलाम रियासतें थीं। भारत में एक ऐसा समुदाय भी पैदा हो चुका था, जिसने मुगलों की राजनीतिक ताकत को ललकारना शुरू कर दिया था। यह सिक्ख इंकलाब था, जिसे दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'ख़ालसा' रूप दिया। इसने सन् १७१० में बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में उत्तरी भारत के एक विशाल क्षेत्र पर भारत की पहली आज़ाद हुकूमत का हकीकी नक्शा खींच दिया था। चाहे ख़ालसा की हुकूमत ज्यादा समय तक टिक नहीं सकी, लेकिन उसने थोड़े ही समय में देश की ग़ुलाम मानसिकता वाले लोगों के दिमाग़ में विदेशी ज़ालिम हुकूमत को जड़ से उखाड़ फेंकने का एक सफल तजुर्बा करके दिखा दिया था।

डॉ. जगजीत सिंघ अपनी पुस्तक 'सिक्ख लहर' में लिखते हैं-- ''ख़ालसे के अगुआ और आम सदस्य अपने इंकलाबी निशानों के साथ पूरी तरह से लबरेज थे। उनमें वही शामिल था जिसने जान हथेली पर रखी हो, क्योंकि यह एक खुल्लम-खुला इंकलाब था, जिसमें किसी भी प्रकार का पर्दा नहीं था या पीछे लौटने की गुंजाइश नहीं थी। . . . अंमृत छके बिना कोई भी ख़ालसा का सदस्य नहीं बन सकता था और कोई भी तब तक अमृत

*पूर्व रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९८५५०-३५३५५

नहीं छक सकता था जब तक वह ख़ालसा के मानव-समानता के आदर्शों के साथ जुड़े रहने का अहद न करे।'' खालसा जत्थों के सभी सदस्य कुल-वक्ती इंकलाबी योद्धा होते थे, जो तनखाहदार या भाड़े पर नहीं थे। ऐसे कुल-वक्ती लड़ाकू रणनीति सन् १९१७ के रूसी इंकलाब और सन् १९४९ के चीन इंकलाब लाने वाली कम्यूनिस्ट जत्थेबंदियों ने भी सफलतापूर्वक अपनाई थी। आश्चर्य की बात है कि ख़ालसा ने भारत में इनसे एक सदी पूर्व ही वह सफल तजुर्बा कर लिया था जिसकी शुरूआत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. की वैसाखी वाले दिन ख़ालसा सजा कर की थी। इस तथ्य से हम ख़ालसा के धार्मिक तौर पर परिपक्व होते हुए हथियारबंद लड़ाई के अनुप्रयुक्त और वैज्ञानिक स्तर से समानांतर होने का अंदाज़ा भी लगा सकते हैं।

१७१६ ई. में हिंदोस्तान के मुग़ल बादशाह फरुख्सियर ने पंजाब के सूबेदार अब्दुल समद ख़ान को इनाम के तौर पर छः हज़ार की मनसबदारी, हीरों से जड़ित पालकी, हाथी, घोड़े, सोने तथा हीरों के ज़ेवर, एक कलगी जिगा, हीरों से जड़ित एक पगड़ी, कीमती अचकन, शुद्ध मोतियों की माला और पंजाब के कुछ परगनों की जागीर दी, क्योंकि उसने (अब्दुल समद ख़ान) बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा स्थापित किये सिक्ख राज को बहुत ही ज़ालिमाना तरीके से कुचला था। इसके अलावा बादशाह ने आम नागरिकों के नाम सिक्खों के बाबत एक खुला चेतावनी-पत्र जारी किया, जिसके अनुसार जहाँ कहीं भी कोई ज़िंदा सिक्ख मिले उसे सम्बन्धित इलाके के हाकिम हिरासत में ले लें। यदि वह इसलाम धर्म अपना ले तो जान बख्शी जाये, नहीं तो मौत के घाट उतार दिया जाए। ऐसा कारनामा करने वाले सरकारी अहलकारों के लिए भी कई प्रकार के इनामों की घोषणा की गई थी। पंजाब के सूबेदार अब्दुल समद ख़ान ने एक अजीब हुक्म जारी किया कि बाबा बंदा सिंघ बहादुर के संघर्ष के समय सिक्खों ने सरकारी माल के अलावा किसी आम आदमी का नुकसान किया हो तो वह भी हरजाने की दरख़ास्त दे, हुकूमत उसका मुआवज़ा दिलाएगी। इसके बाद बहुत-से सिक्ख दुश्मनों ने मुआवज़े के लिए जाली दावे करने शुरू कर दिए थे। (संयोगवश ऐसा कानून अब आज़ाद भारत में भी लागू है। हुकूमत ने सभी सिक्खों, ख़ास कर किसानों (जिनमें बहुसंख्या जाटों की थी) की अचल जायदाद कुर्क या ज़ब्त कर नीलाम कर दी थी। हुकूमत के इस कदम से सिक्ख किसानों के घर-घाट और कृषियोग्य ज़मीन छीन ली गई और उन्हें अपनी जान बचाने के लिए बे-आबाद रेगिस्तान तथा जंगली इलाकों की तरफ कूच करने को विवश होना पड़ा। उपरोक्त तथ्यों का प्रकटावा श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी प्रताप सिंघ ने सन् १९४५ में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'सिक्ख ऐतिहासिक लेक्चर' में किया है।

सन् १७१९ में बादशाह फरुख्सियर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुहम्मद शाह उर्फ रंगीला बादशाह दिल्ली के तख़्त पर बैठा। वह शराब और शबाब की महफ़िलों में ही व्यस्त रहता, सिक्खों के हक में उसने भी कोई नरमी नहीं दिखाई। इधर पंजाब के क्षेत्र में लाहौर, कसूर, सरहिंद और मुलतान के सूबेदारों के दरमियान 'तुरानी और अफगानी' राजनीतिक लड़ाई ज़ोरों पर थी। लाहौर का सूबेदार ज़िंदगी के अंतिम पड़ाव पर शराब, कबाब और कंजरियों के नाच-गाने की दावतों में व्यस्त रहता

था, जबकि सिक्खों के ख़िलाफ़ सख्ती पहले की तरह जारी थी। पंजाब के गाँवों में सिक्खों की कुर्क और नीलाम की ज़मीनों के मालिक निकम्मे मौलाना, चौधरी और ग़ुलाम मानसिकता वाले हिंदू बन बैठे थे। तब 'उज्जड़े बाग़ां दे गाल्हड़ पटवारी' (पंजाबी लोकोक्ति) वाली लोकोक्ति खूब जचती थी। कृषि का धंधा चौपट हो गया था, जिस कारण गत कई वर्षों से सरकारी मालिया की आमदन बहुत घट गई थी। अनाज की कमी हो गई, जिस कारण शाही खजाने को भारी माली नुकसान होना शुरू हो गया। सरकार अपने फौजियों को तनख्वाह देने में भी असमर्थ हो रही थी। पंजाब में से गत लंबे समय से केंद्र की तरफ मालिया कम जाने के कारण और यहाँ के हाकिमों की आपसी खींचतान की खबरें मिलने पर बादशाह मुहम्मद शाह ने अब्दुल समद ख़ान को लाहौर की कमान से उतार कर उसके पुत्र ज़कारिया ख़ान को सन् १७२६ में लाहौर का सूबेदार नियुक्त कर दिया। इससे पहले वह (१७१३ ई. से १७२६ ई. तक) जम्मू-कश्मीर का गवर्नर था। ज़कारिया ख़ान की दिल्ली के दरबार में ख़ास जगह थी, क्योंकि वह मुग़ल बादशाह के प्रधानमंत्री का जमाई था। राज्य की माली हालत को सुधारने के लिए बादशाह ने मुलतान को पंजाब से अलग कर दिया और अब्दुल समद ख़ान को उसका सूबेदार बना दिया, जहाँ वह सन् १७३७ में मर गया और ज़कारिया ख़ान ने मुलतान दोबारा लाहौर के अधीन कर लिया।

सोहन लाल सूरी अपनी रचना 'उम्दा- उत-तवारीख' में लिखता है कि ज़कारिया ख़ान ने सिक्खों को दबाने के लिए बीस हज़ार फ़ौज की भरती की। उनमें से दस हज़ार फौजियों को लाहौर में ही तैनात किया और बाकियों को मोमिन ख़ान की कमान में हज़ार-हज़ार की दस ब्रिगेडों में बाँट दिया। उन्हें तेज़-तरार घोड़े, ऊँट और हल्की तोपों (जम्बूरकों) से लैस किया। इन टुकड़ियों को 'गश्ती फ़ौज' कहा जाता था। सरकार की इस कार्यवाही से इस तथ्य का पता चलता है कि सन् १७१६ से १७३७ के इक्कीस वर्ष के लंबे समय के दौरान सिक्ख पुनः जत्थेबंद होकर सरकार के साथ छापामार लड़ाई कर रहे थे। इतिहासकार कन्हैया लाल, 'तारीख-ए-पंजाब' (फ़ारसी) में लिखता है कि सिक्ख दर-ब-दर जीवन बसर करते हुए भी अक्सर यह गीत गाते थे :

''सुण नीं मुगलां दीए माँए!
वापस तेरे जवाई सिंघ आए कि आए।''

अब सिक्ख ख़ानाबदोश होकर भी दिल्ली की मुग़ल हुकूमत को उखाड़ फेंकने का प्रण किए बैठे थे। इस प्रकार उस समय में सिक्ख ही एक ऐसी कौम थी जो देश-भक्ति एवं कौम-परस्ती की एक नयी इबारत लिख रही थी। यहाँ यह ऐतिहासिक तथ्य बताना ज़रूरी है कि भारत के उत्तरी-पश्चिमी हिस्से (दरिया यमुना और सिंध के मध्य का इलाका तथा कश्मीर) पर मुग़ल हुकूमत का कब्ज़ा था, जो अफगान लुटेरों की सीधी मार तले रहता था, जिसकी ग़ुलामी के अंतर्गत हिमाचल के पहाड़ी राजा और पटियाला की फूलकिया रियासत भी थी। सरकार की गश्ती फौजें सिक्खों को ढूँढने के बहाने आम लोगों की लूटमार करने लग गईं। उन्होंने जहाँ कहीं भी सिक्खों के धर्म-स्थान देखे, उन्हें गिरा दिया और धार्मिक ग्रंथों को दरिया में बहा दिया या जला दिया। हुकूमत ने 'गुरु' शब्द के उच्चारण पर भी पाबंदी लगा दी। ज़कारिया ख़ान का हिंदू दीवान लखपत राय सिक्खों के ख़िलाफ़ जुल्म करने में सबसे अग्रणी भूमिका निभाता और अक्सर

आम हिंदू जनता को भी सिक्खों के ख़िलाफ़ भड़काता था। दूसरी तरफ़ ज़करिया ख़ान के कट्टर मौलाना आम मुसलमानों को सिक्खों के ख़िलाफ़ जेहाद छेड़ने के लिए उकसाते रहते थे। एक बार लाहौर सरकार ने लखपत राय की कमान में हिंदुओं और मुसलमानों को हथियारबंद कर तथा सरकारी फौज की सरप्रस्ती में सिक्खों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए भेजा था, मगर वे भीलोवाल और रावी दरिया के जोहड़ से सिक्खों से करारी हार खाकर वापस लौट आए थे। यह घटना छोटे घल्लूघारे से कुछ समय पहले की है। सिक्खों का धार्मिक जज़्बा, विश्वास, समानता, भ्रातृ-भाव, सभी धर्मों का सम्मान और आदर्श की एकता ने उन्हें मज़बूत व जत्थेबंद किया था। सिक्ख लड़ाकू जत्थों ने जब देश-भक्ति की उच्चतम मिसाल पेश करते हुए सन् १७३९ में अफगान लुटेरे नादिर शाह के फ़ौजी काफ़िलों पर हमला कर लूटमार का माल छीना, सैकड़ों बंदी बनाई हिंदू स्त्रियों को छुड़ाया, तब हुकूमती गलियारों में सिक्खों के कारनामों की खूब चर्चा छिड़ी। नादिर शाह ने ज़करिया ख़ान को सिक्खों से खबरदार करते हुए भविष्य-वाणी की कि किसी दिन ये (सिक्ख) इस मुल्क के मालिक बनेंगे। वक्त के चलते लड़ाकू सिक्ख जत्थों ने उस लुटेरे अब्दाली के जंगी साज-ओ-सामान और लूटमार की दौलत को कई बार छीना, जिसने भारत पर एक दर्जन से अधिक बार हमला किया था। सिक्खों ने सन् १७६२ में बड़े घल्लूघारे के समय अब्दाली के हाथों भारी जानी नुकसान करवा कर भी अपना संघर्ष जारी रखा और उसे करारी हार देकर अफगानिस्तान लौटने के लिए विवश कर दिया। एक बार तो हुकूमत ने यह सोच कर सिक्खों को पंजाब के कुछ इलाकों की नवाबी दे दी कि वे ऐसे में संघर्ष का रास्ता त्याग देंगे, परन्तु सिक्खों ने कुछ समय बाद उसे ही त्याग दिया और फिर से जत्थेबंद होकर संघर्ष के रास्ते पर चल पड़े। सन् १७८३ में बाबा बघेल सिंघ, सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया की सामूहिक कमान तले खालसा दलों ने दिल्ली फतिह की और मुग़ल हुकूमत का अहंकार तोड़ा। आखिर भारत के उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र में लंबे संघर्ष के बाद सिक्खों की आज़ाद हुकूमत स्थापित हुई थी। ऐसा इसलिए संभव हो सका था कि उन्होंने भारत के लोगों के साझे दुश्मन (विदेशी मुग़ल हुकूमत, जिसे वे 'मलेशों की सरकार' कहते थे) की पहचान की और उसके विरुद्ध ही हथियारबंद टक्कर ली। उन्होंने अपने संघर्ष को कभी भी आम मुस्लिम या हिंदू जनता के विरुद्ध नहीं होने दिया। अंग्रेज़ इतिहासकार परसीवल स्पियर अपनी पुस्तक 'दी ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया' में लिखता है कि सिक्खों को इतनी मार झेलनी पड़ी कि वे पान चढ़े लोहे की भांति मज़बूत हो गए थे। सिक्ख धर्म की शिक्षाओं और देश पर से कुर्बान होने के जज़बे ने उनके हौंसले बुलंद रखे। लंबे संघर्ष के दौरान उनका निशाना अपनी छीनी गई ज़मीनें वापस लेना नहीं, बल्कि भारत को हर हाल में विदेशी हुकूमत से आज़ाद करवाना था। विगत वर्षों के किसानी आंदोलन (संघर्ष) को इसी कौम ने शुरू किया है, जिसकी चर्चा अब फिर सारी दुनिया में है।

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विशेष अधिवेशन में भारत सरकार से हरियाणा गुरुद्वारा एक्ट रद्द करने की उठाई गई माँग

श्री अमृतसर : ३ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आयोजित विशेष अधिवेशन के दौरान हरियाणा सरकार और उसकी नामज़द एडहॉक गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ऐतिहासिक गुरुद्वारों के प्रबंध पर जबरन कब्ज़ा करने की सख़्त शब्दों में निंदा करने का प्रस्ताव पारित करते हुए इस मसले पर संसद की विशेष सभा बुला कर हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट एक्ट-२०१४ रद्द करने की भारत सरकार से माँग की गई है। इस सम्बन्ध में प्रयास हेतु एक ६-सदस्यीय कमेटी का गठन भी किया गया, जो पूरे भारत में विभिन्न पार्टियों और संसद के दोनों सदनों के सदस्यों के साथ संबंध स्थापित कर सिक्खों की संवैधानिक संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को जबरन विखंडित करने के विरोध में आवाज़ उठाने के लिए कहेगी। अधिवेशन में भारत के समूह संसद सदस्यों को इससे सम्बन्धित पत्र लिखने का भी निर्णय लिया गया। इसके साथ ही भारतीय जनता पार्टी द्वारा अल्पसंख्यक वर्ग के साथ की जा रही बेइन्साफ़ी और धक्केशाही के विरुद्ध भी एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह विशेष अधिवेशन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हज़ूरी में हुआ, जिसमें श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी ज्ञानी बलविंदर सिंघ, ज्ञानी बलजीत सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित बड़ी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया।

अधिवेशन में विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट करते हुए हरियाणा सरकार की तरफ से अपनी नामज़द एडहॉक गुरुद्वारा कमेटी के माध्यम से गुरु-घरों की गोलकों के ताले काटने, बावर्दी और जूतों सहित पुलिस गुरु-घरों में ले जाने तथा संगत को गुरु-घर से धक्के मार कर बाहर निकालने की कड़ी निंदा करते हुए सरकारों की ऐसी सिक्ख विरोधी कार्यवाहियों का कड़ा विरोध किया। वक्ताओं ने साफ़ तौर पर कहा कि इस मसले पर सभी सदस्य एकजुट हैं और हरियाणा कमेटी के विरुद्ध की जाने वाली अगली कार्यवाही में सहयोगी रहेंगे। अपने संबोधन में सदस्यों ने कहा कि गुरु-घरों में सरकारी हस्तक्षेप के लिए सीधे तौर पर भारतीय जनता पार्टी ज़िम्मेदार है।

अधिवेशन के पश्चात् मीडिया के रूबरू होते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि इस अधिवेशन के दौरान सबकी सहमति से दो अहम प्रस्ताव पारित किए गए हैं। उन्होंने बताया कि एक प्रस्ताव में भारत सरकार से अपील की गई है कि हरियाणा गुरुद्वारा एक्ट-२०१४ रद्द कर वहाँ के गुरुद्वारों का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को वापस दिलाने के लिए संसद में कार्यवाही की जाए, क्योंकि सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ आज भी बरकरार है। इस एक्ट के अनुसार हरियाणा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चयनित सदस्य कार्यशील हैं और गुरुद्वारा साहिबान भी सूचीबद्ध हैं। सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के अनुसार हरियाणा के

गुरुद्वारा एक्ट-२०१४ को मान्यता अवश्य दी गई है, परंतु सरकार की नामज़द एडहॉक कमेटी ने बिना किसी अधिकार के सरकारी ताकत का दुरुपयोग हुए करते हुए ग़ैर कानूनी तरीके से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध वाले ऐतिहासिक और नोटीफाइड गुरुद्वारों का प्रबंध जबरदस्ती प्राप्त किया है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में सरकारी प्रसाशन और सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया, जिसने सिक्ख भावनाओं को चोट पहुंचाई है। सरकार की यह कार्यवाही सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ की स्पष्ट रूप से तौहीन है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पूर्ण रूप से एक आज़ाद संस्था के तौर पर कार्यरत होने के कारण सरकार की आँखों में चुभती है, इसी कारण सरकारों द्वारा समय-समय पर इसे विखंडित करने की कोशिशें की जाती हैं। हरियाणा कमेटी भी इसी साजिश का ही एक हिस्सा है। यह सिक्ख शक्ति को कमजोर करने और बाँटने के लिए कांग्रेस की एक चाल थी, जिसमें आज भारतीय जनता पार्टी भी शामिल हो चुकी है। हरियाणा कमेटी एक्ट बिना केंद्र सरकार की मंज़ूरी लिए बनाया गया और यह भारतीय संविधान के बिलकुल विरुद्ध है। संविधान के आर्टिकल-२४६ शेड्यूल-७ की सूची-१ में कानून बनाने का अधिकार केवल भारत सरकार के पास है, जबकि हरियाणा सरकार ने इस आर्टिकल के शेड्यूल की सूची-२ के हवाले का गलत प्रयोग करते हुए हरियाणा गुरुद्वारा एक्ट बनाया है। यह संविधान के बिलकुल विरुद्ध है।

एडवोकेट धामी ने बताया कि अधिवेशन में पारित किए दूसरे प्रस्ताव में अल्पसंख्यक वर्ग को दबाने के लिए सरकारी साजिशों की आलोचना की गई है। एडवोकेट धामी के अनुसार प्रस्ताव में कहा गया है कि वोट की राजनीति पर चलते हुए भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए सरकार की तरफ से हर प्रकार से प्रयास किया जा रहा है। इसी के अंतर्गत भाजपा अपने मोहरों के माध्यम से गुरुद्वारा साहिबान के पंथक प्रबंध को तोड़ कर उसे अपने अनुसार चलाना चाहती है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने बताया कि इस प्रस्ताव के माध्यम से सरकार को सख़्त ताड़ना की गई है कि अल्पसंख्यक वर्ग के धार्मिक मसलों में हस्तक्षेप बंद किया जाए।

हरियाणा गुरुद्वारा कमेटी के मसले पर अधिवेशन के दौरान गठित ६-सदस्यीय कमेटी के बारे में एडवोकेट धामी ने बताया कि इसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कायमपुर, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. अवतार सिंघ रिआ, महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), सीनियर अकाली नेता स. बलविंदर सिंघ भूंदड़, प्रो. प्रेम सिंघ चंदूमाजरा और डॉ. दलजीत सिंघ (चीमा) शामिल किए गए हैं। उन्होंने बताया कि यह कमेटी तुरंत कार्य शुरू करेगी। उन्होंने यह भी बताया कि यदि ज़रूरत पड़ी तो इस विषय पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सिक्ख सम्मेलन भी बुलाया जायेगा।

हरियाणा के गुरुद्वारों का प्रबंध पुलिस के जरिए जबरन लेना सरासर गलत : ज्ञानी हरप्रीत सिंघ

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आयोजित विशेष अधिवेशन के दौरान संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि हरियाणा सरकार की नामज़द एडहॉक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा साहिबान का पुलिस के जरिए प्रबंध हथियाना एक बड़ी गलती है, जो उन्हें स्वीकार कर लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम को आत्मविश्लेषण करना चाहिए। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने कहा कि सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ अब भी ज्यों का त्यों कायम है

और सुप्रीम कोर्ट ने अपने फ़ैसले में इसे बिल्कुल नहीं छुआ है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के गुरुद्वारा प्रबंध के मसले पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ बात करनी चाहिए थी। गुरु-मर्यादा के विरुद्ध सरकारी ढंग से प्रबंध लेना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्थाएं कौम का गौरव हैं और इनकी मज़बूती बहुत आवश्यक है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कौम की रीढ़ की हड्डी है। बाकी संस्थाएं भी कौम का अहम अंग हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को विखंडित करना दुर्भाग्यपूर्ण है। सिक्ख पंथ को चाहिए कि वो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को मज़बूत बनाए रखने के लिए आगे आए, क्योंकि इसकी मज़बूती से ही पंथ मज़बूत रहेगा।

अधिवेशन को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कायमपुर, महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), बीबी किरनजोत कौर, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, स. महिंदर सिंघ हुसैनपुर, बाबा गुरप्रीत सिंघ, स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, स. बलविंदर सिंघ (बैंस), स. करनैल सिंघ पंजोली, स. सरवन सिंघ कुलार और सचिव स. प्रताप सिंघ ने संबोधित किया। अधिवेशन में पहुंचे सिंघ साहिबान और सदस्यों का महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने धन्यवाद किया।

अधिवेशन में उपस्थित रही शख़्सियतें

अधिवेशन के दौरान उपस्थित शख़्सियतों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, पूर्व प्रधान प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल, स. अलविंदरपाल सिंघ पक्खोके, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कायमपुर, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. अवतार सिंघ रिआ, महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), सदस्यगण-- स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. गुरनाम सिंघ जस्सल, स. परमजीत सिंघ खालसा, स. सुरजीत सिंघ (कंग), स. सरवण सिंघ कुलार, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. मलकीत सिंघ चंगाल, बाबा गुरप्रीत सिंघ, सदस्य बीबी मनजीत कौर कंधोला, बीबी अमरजीत कौर, बीबी किरनवीर कौर, स. नवतेज सिंघ काउणी, स. कौर सिंघ बहाववाला, स. दरशन सिंघ बराड़, स. प्रीतम सिंघ मनसीहां, स. दरशन सिंघ शेरखां, स. गुरमीत सिंघ बूह, बीबी नरिंदर कौर, स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे, बीबी गुरिंदर कौर, स. शेर सिंघ मंडवाला, बीबी जोगिंदर कौर रठौर, स. सुरजीत सिंघ रायपुर, स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, बीबी परमजीत कौर, स. इंदरमोहन सिंघ लखमीरवाला, बीबी जसपाल कौर, स. भुपिंदर सिंघ पहिलवान, स. हरदेव सिंघ रोंगला, बीबी मलकीत कौर कमालपुर, स. कुलदीप सिंघ नस्सूपुर, बीबी हरदीप कौर, स. सतविंदर सिंघ टौहड़ा, स. जसमेल सिंघ लाछड़ू, स. रविंदर सिंघ खालसा, स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, स. जगजीत सिंघ तलवंडी, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, स. केवल सिंघ बादल, स. बलविंदर सिंघ (बैंस), स. सरबंस सिंघ माणकी, बीबी हरजिंदर कौर, स. महिंदर सिंघ हुसैनपुरा, स. गुरबख़श सिंघ खालसा, स. बलदेव सिंघ कल्याण, बीबी दविंदर कौर (कालड़ा), स. रणजीत सिंघ (काहलों), बीबी गुरप्रीत कौर भुंगा लंबाणा, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. बलजीत सिंघ जलालउसमां, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूईं, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. खुशविंदर सिंघ (भाटिया), भाई मनजीत सिंघ, स. अमरजीत सिंघ, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. रजिंदर सिंघ महिता, बीबी किरनजोत कौर, स.

सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड, एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, बीबी बलविंदर कौर लोपोके, स. अमरीक सिंघ विछोआ, बीबी सरवन कौर तेड़ा, बीबी जोगिंदर कौर, बीबी जसवीर कौर जफ्फरवाल, स. चरनजीत सिंघ कालेवाल, बीबी परमजीत कौर लांडरां स. करनैल सिंघ पंजोली, भाई राम सिंघ, स. सुरजीत सिंघ (कंग), स. सुखवरश सिंघ (पन्नू), स. तजिंदरपाल सिंघ, सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अतिरिक्त सचिव स. सुखमिंदर सिंघ, स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. बिजै सिंघ, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. सिमरजीत सिंघ (कंग), उप सचिव स. गुरचरन सिंघ कोहाला, स. जसविंदर सिंघ जस्सी, स. शाहबाज सिंघ, मीडिया इंचार्ज स. हरभजन सिंघ वक्ता, कानूनी सलाहकार स. अमनबीर सिंघ सिआली, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल आदि अपस्थित थे।

अकाली बाबा फूला सिंघ की दूसरी शहीदी शताब्दी का मुख्य समागम ख़ालसयी हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

श्री अमृतसर : १४ मार्च : सिक्ख कौम के महान जरनैल, श्री अकाल तख़्त साहिब बेधड़क जत्थेदार और शिरोमणी पंथ अकाली बुड्ढा दल के छठे प्रमुख अकाली बाबा फूला सिंघ की दूसरी शहीदी शताब्दी पर आयोजित किए गए विशाल समागम के अवसर पर संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख कौम को शब्द-गुरु, सिक्ख इतिहास, सिक्ख साहित्यक कृतियों को अपना मार्गदर्शन बनाने और विवेकी जीवन बनाने के के लिए गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलने को अति आवश्यक बताया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल द्वारा सामूहिक रूप से गुरुद्वारा श्री मँजी साहिब दीवान हाल में आयोजित शताब्दी समागम के दौरान बड़ी संख्या में सिक्ख कौम की प्रतिनिधि शख़्सियतों ने शिरकत की।

इस अवसर पर देश-विदेश की संगत को अपने संबोधन के दौरान जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि अकाली बाबा फूला सिंघ खालसा राज के स्तम्भ थे, जिनकी शहादत के अवसर पर महाराजा रणजीत सिंघ ने वैराग्य में आकर कहा था कि सिक्ख राज का एक महान नायक चला गया है। उन्होंने कहा कि अकाली जी का सारा जीवन खालसा राज और सिक्ख पंथ की उन्नति के लिए था, जिसे वर्तमान पीढ़ी के रूबरू करना अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि 'अकाली' शब्द बाबा फूला सिंघ की शख़्सियत और उनकी जरनैली प्रतिभा को हूबहू परिभाषित करता है। अकाली होना आम बात नहीं है। यह दैवी गुणों और प्रभु-शक्ति का सूचक है। आज अकाली बाबा फूला सिंघ के किरदार को समझने और सिक्ख चेतनता का हिस्सा बनने की अति आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज सिक्ख नौजवानी को अपने इतिहास से दिशा-निर्देश लेने की और भी ज़्यादा ज़रूरत है, क्योंकि आज के सोशल मीडिया युग में अपक्व और अज्ञानी लोगों द्वारा परोसा जा रहा विचार-भंडार समाज के लिए बहुत ख़तरनाक साबित हो रहा है। सिक्खी आचरण, गुरु-हुक्म और सिक्ख परंपराओं की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि बिना सोचे-समझे किसी के विचार को आगे बढ़ाने की जगह विश्राम देने की ज़रूरत है। गुरु-प्रदत्त जीवन-जाच ही सिक्ख किरदार का केंद्रीय बिंदु है और प्रत्येक

सिक्ख को इसी के अनुसार ही जीवन जीना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिक्ख पंथ की संस्थायों की सलामती के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है। चाहे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हो या सिक्ख पंथ की सम्मानित संप्रदाएं, सबके मज़बूत होने से ही खालसा पंथ की मज़बूती है। इस संदर्भ में अकाली बाबा फूला सिंघ की देन को समर्पित होने की ज़रूरत है।

शताब्दी समागम के अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्ख पंथ का इतिहास अकाली बाबा फूला सिंघ जैसे योद्धाओं की जीवन-गाथा के साथ भरा पड़ा है, परन्तु दुख की बात है कि आज कुछ शक्तियां और सरकारें सिक्ख इतिहास और सिक्खी को भारी नुकसान पहुँचाने के रास्ते पर चली हुई हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख शक्ति को कमज़ोर करने के उद्देश्य से सरकारी शक्ति के ज़ोर पर सिक्ख संस्थायों पर कब्ज़े किए जा रहे हैं। उन्होंने सिक्ख कौम से अपील की कि पंथक एकजुटता के साथ ऐसी पंथ-विरोधी साजिशों एवं ऐसे गुप्त हमलों का मुँहतोड़ जवाब दिया जाए।

इस दौरान शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख जत्थेदार बाबा बलबीर सिंघ ९६ करोड़ी ने कहा कि दल को इस बात का फख्र है कि जत्थेदार अकाली बाबा फूला सिंघ छठे जत्थेदार थे। उनके द्वारा की गई पंथक सेवाएं आज भी सिक्ख इतिहास का हिस्सा हैं। उदाहरण के तौर पर जत्थेदार अकाली बाबा फूला सिंघ का नाम याद किया जाता है। जत्थेदार बाबा बलबीर सिंघ ने कहा कि शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल हमेशा ही सिक्ख पंथ की अग्रणी संस्था बनकर नेतृत्व करता रहा है। इसकी उदाहरण यह है कि दल पंथ के १० जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब पर बतौर जत्थेदार कौम का नेतृत्व करते रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये शताब्दी समागम यहीं पर समाप्त होने वाले नहीं हैं, बल्कि इन्हें सन् २०२४ तक विश्व स्तर पर हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता रहेगा। उन्होंने समागम के दौरान सहयोग करने वाले समूह दलों, संप्रदायों, कार सेवा वाले महापुरुषों, सिक्ख संस्थायों और संगत का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर तरुना दल हरियां वेलां के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ ने कहा कि सिक्ख के किरदार का आधार बाणी और बाणे के संगम है, परन्तु दुखद पहलू यह है कि आज हम अमृत बेला में नितनेम और गुरमति आचरण से दूर होते जा रहे हैं। सिक्ख कौम की चढ़दी कला के लिए गुरबाणी और सिक्खी आचरण में परिपक्वता होना बेहद लाज़मी है। कौम को इसकी तरफ विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। समागम के समय दल बाबा बिधी चंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, बंदी सिंघ भाई गुरदीप सिंघ खेड़ा, दिल्ली कमेटी के पूर्व प्रधान स. मनजीत सिंघ जीके, सिक्ख विद्वान ज्ञानी गुरबख़्श सिंघ गुलशन, बुड्ढा दल के कथावाचक ज्ञानी शेर सिंघ अंबाला, ज्ञानी रणजीत सिंघ दिल्ली, ज्ञानी भगवान सिंघ जौहल और भाई सरबजीत सिंघ ढोटियां ने भी संबोधित किया। समागम के दौरान पहुँची प्रमुख शख़्सियतों को गुरु-बखिशश सिरोपायो, श्री साहिब, सम्मान-चिह्न, चाँदी के यादगारी सिक्के और धार्मिक पुस्तके देकर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व हज़ूरी रागी भाई करनैल सिंघ, बाबा हरजीत सिंघ महिता चौंक ने गुरबाणी कीर्तन किया और सिक्ख पंथ के प्रसिद्ध ढाडी ज्ञानी तरसेम सिंघ मोरांवाली तथा कवीशर भाई गुरिंदरपाल सिंघ बैंका के जत्थे ने संगत को सिक्ख इतिहास श्रवण करवाया।

दाख़िला सूचना

पंथ-रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंह टौहड़ा
इंस्टीट्यूट ऑफ अडवांस्ड स्टडीज़ इन सिक्खिज़्म
बहादरगढ़ (पटियाला)

गुरमुखी टीचिंग ट्रेनिंग के लिए त्रैवार्षिक डिग्री कोर्स

बैचलर ऑफ आर्ट्स (आनर्स) इन गुरमुखी एजूकेशन

BACHELOR OF ARTS (HONORS) IN GURMUKHI EDUCATION

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब वर्ल्ड यूनिवर्सिटी, फतहिगढ़ साहिब)

लड़के और लड़कियों के लिए

योग्यता

- शैक्षिक योग्यता 12वीं कक्षा (कोई भी ग्रुप) उत्तीर्ण हो तथा गुरसिक्ख होना लाज़मी है।
- 11वीं कक्षा उत्तीर्ण और १२वीं कक्षा की परीक्षा दे रहे विद्यार्थी भी इस कोर्स के लिए अप्लाई कर सकते हैं।
- 12वीं कक्षा के परिणाम के लिए प्रतीक्षारत उम्मीदवार भी अप्लाई कर सकते हैं।
- उम्मीदवार की आयु-सीमा अधिक से अधिक २५ वर्ष हो।

भविष्य

- कोर्स के पश्चात् विद्यार्थी यूनिवर्सिटी नियमों के अनुसार ई.टी.टी., बी.एड. और धर्म, इतिहास, पंजाबी, एजूकेशन आदि विषयों में एम.ए. कर सकते हैं।
- सरकारी और ग़ैर-सरकारी अदारों में स्नातक स्तर की असामियों के लिए योग्य।
- शिक्षार्थी, सिक्ख/पंजाबी शैक्षिक अदारों, गुरुद्वारा साहिबान और धार्मिक/समाजसेवी संस्थायों में गुरमुखी अध्यापक के तौर पर सेवा निभाने के योग्य होंगे।

सुविधाएं

- रिहायश के लिए नि:शुल्क छात्रावास के अलावा हरा-भरा चौगिर्दा, सुंदर पार्क, खेल और पुस्तकालय की सुविधा।
- उच्च योग्यता वाला स्टाफ, स्मार्ट क्लास-रूम और कंप्यूटर लैब की सुविधा।
- शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अदारों में नौकरी के वक्त प्राथमिकता।
- धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से खाने (लंगर) आदि के ख़र्च के लिए १५००/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा।

दाख़िले सम्बंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

84377-00852, 90416-20861, 75270-56756

E-mail : tohrainstitute@gmail.com

Visit us : www.sggswu.edu.in

1500/- रुपए प्रति माह वज़ीफ़ा

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

हरजिंदर सिंह एडवोकेट
प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN April 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अंगद देव जी
गाँव सराय नागा, जिला श्री मुकतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-4-2023